ISMAIL NATIONAL MAHILA PG COLLEGE, MEERUT

(Affiliated with C.C.S University, Meerut, formerly Meerut University)

NAAC Accredited A Grade College

Summary Sheet-

Criteria	Criteria 03- Research, Innovations and Extension
Key Indicator	3.3-Research Publication and Awards
Metric	3.3.2-Number of research papers per teachers in the Journal notified on UGC website during the year
Response	

Dr Huma Masood

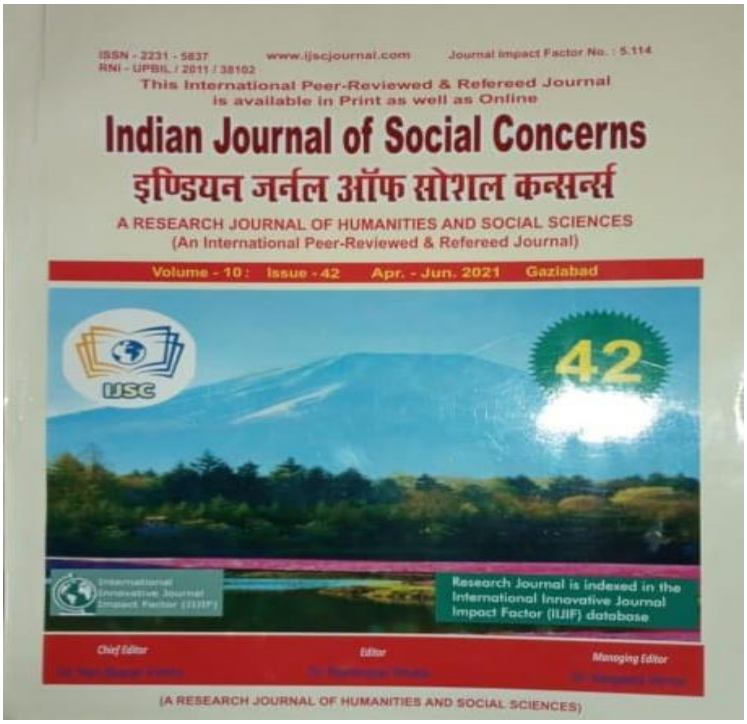

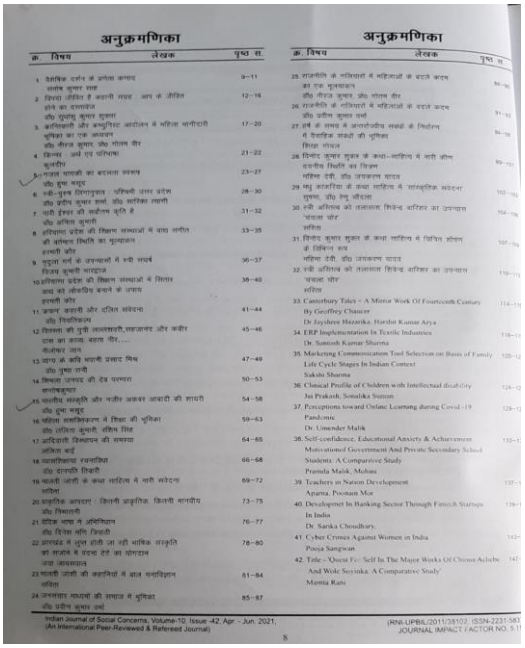

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय / लेखक	पृष्ठ सं.
1	वैशेषिक दर्शन के प्रणेता कणाद संतोष कुमार साह	9–11
2	जिन्दा जीवित है कहानी संग्रह : आप के जीवित होने का दस्तावेज डॉ0 सुधांशु कुमार शुक्ला	12–16
3	क्रान्तिकारी और कम्युनिस्ट आंदोलन में महिला भागीदारी भूमिका का एक अध्ययन डॉ0 नीरज कुमार, प्रो0 गौतम वीर	17–20
4	किन्नर : अर्थ एवं परिभाषा कुलदीप	21–22
5	गजल शायरी का बदलता स्वरूप डॉ0 हुमा मसूद	23–27
6	स्त्री–पुरुष लिंगानुपात : पश्चिमी उत्तर प्रदेश डॉ0 प्रदीप कुमार शर्मा, डॉ0 सारिका त्यागी	28–30
7	नारी ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है डॉ0 अनिता कुमारी	31–32
8	हरियाणा प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं में वाद्य संगीत की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन हरप्रीत कौर	33–35
9	मृदुला गर्ग के उपन्यासों में स्त्री संघर्ष विजय कुमारी भारद्वाज	36–37
10	हरियाणा प्रदेश की शिक्षण संस्थाओं में सितार वाद्य को लोकप्रिय बनाने के उपाय हरप्रीत कौर	38–40
11	जूठन कहानी और दलित संवेदना डॉ0 [illegible]	41–44
12	[illegible] की पुत्री ललदेश्वरी, सहजानंद और कबीर दास का काव्य बहता नीर.... [illegible]	45–46
13	व्यंग्य के कवि भवानी प्रसाद मिश्र डॉ0 पुष्पा रानी	47–49
14	शिमला जनपद की देव परम्परा [illegible]	50–53
15	भारतीय संस्कृति और नजीर अकबर आबादी की शायरी डॉ0 हुमा मसूद	54–58
16	महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका डॉ0 ललिता कुमारी, रश्मि सिंह	59–63
17	आदिवासी विस्थापन की समस्या अनिता बाई	64–65
18	[illegible] रचनाशिल्प डॉ0 [illegible] तिवारी	66–68
19	मालती जोशी के कथा साहित्य में नारी संवेदना सविता	69–72
20	प्राकृतिक आपदाएं : कितनी प्राकृतिक, कितनी मानवीय डॉ0 [illegible]	73–75
21	वैदिक भाषा में अभिनिधान डॉ0 दिनेश मणि त्रिपाठी	76–77
22	झारखंड में लुप्त होती जा रही धार्मिक संस्कृति को सजाने में [illegible] का योगदान [illegible]	78–80
23	मालती जोशी की कहानियों में बाल मनोविज्ञान सविता	81–84
24	जनसंचार माध्यमों की समाज में भूमिका डॉ0 प्रवीण कुमार वर्मा	85–87

अनुक्रमणिका

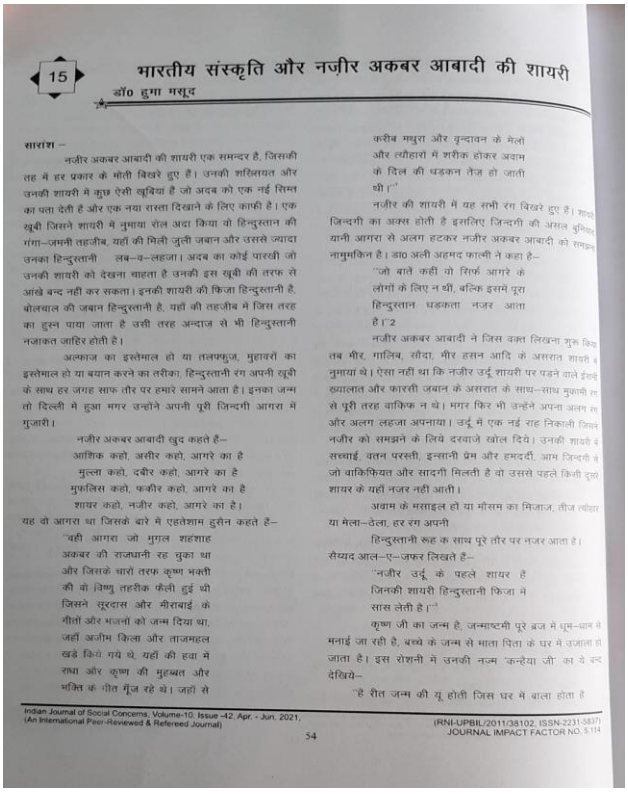

क्र.	विषय / लेखक	पृष्ठ सं.
25	राजनीति के गतिविधियों में महिलाओं के बढ़ते कदम का एक मूल्यांकन डॉ0 नीरज कुमार, प्रो0 गौतम वीर	88–90
26	राजनीति के गतिविधियों में महिलाओं के बढ़ते कदम डॉ0 प्रवीण कुमार वर्मा	91–93
27	धर्म के समय में अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के निर्धारण में वैवाहिक संबंधों की भूमिका शिखा गोयल	94–98
28	विनोद कुमार शुक्ल के कथा–साहित्य में नारी जीवन दयनीय स्थिति का चित्रण महिमा देवी, डॉ0 जयकरण यादव	99–101
29	मधु कांकरिया के कथा साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना सुषमा, डॉ0 रेणू [illegible]	102–103
30	स्त्री अस्तित्व की तलाश : शिरीन बारिशर का उपन्यास 'चंचला चोर' सरिता	104–106
31	विनोद कुमार शुक्ल के कथा साहित्य में चित्रित शोषण के विभिन्न रूप महिमा देवी, डॉ0 जयकरण यादव	107–109
32	स्त्री अस्तित्व की तलाश : शिरीन बारिशर का उपन्यास 'चंचला चोर' सरिता	110–113
33	Canterbury Tales – A Mirror Work Of Fourteenth Century By Geoffrey Chaucer Dr Jayshree Hazarika, Harshit Kumar Arya	114–
34	ERP Implementation In Textile Industries Dr. Santosh Kumar Sharma	118–
35	Marketing Communication Tool Selection on Basis of Family Life Cycle Stages In Indian Context Sakshi Sharma	120–
36	Clinical Profile of Children with Intellectual disability Jai Prakash, Sonalika Suman	124–
37	Perceptions toward Online Learning during Covid -19 Pandemic Dr. Umender Malik	129–
38	Self-confidence, Educational Anxiety & Achievement Motivationof Government And Private Secondary School Students: A Comparitive Study Pramila Malik, Mohini	133–
39	Teachers in Nation Development Aparna, Poonam Mor	137–
40	Developmet In Banking Sector Through Fintech Startups In India Dr. Sarika Choudhary.	139–
41	Cyber Crimes Against Women in India Pooja Sangwan	143–
42	Title - 'Quest For Self In The Major Works Of Chinua Achebe And Wole Soyinka: A Comparative Study' Mamta Rani	147–

15

भारतीय संस्कृति और नज़ीर अकबर आबादी की शायरी

डॉ0 हुमा मसूद

सारांश –

नजीर अकबर आबादी की शायरी एक समन्दर है, जिसकी तह में हर प्रकार के मोती बिखरे हुए हैं। उनकी शख्सियत और उनकी शायरी मे कुछ ऐसी खूबियां हैं जो अदब को एक नई सिम्त का पता देती हैं और एक नया रास्ता दिखाने के लिए काफी है। एक खूबी जिसने शायरी में नुमाया रोल अदा किया वो हिन्दुस्तान की गंगा–जमनी तहजीब, यहाँ की मिली जुली जबान और उससे ज्यादा उनका हिन्दुस्तानी लब–व–लहजा। अदब का कोई पारखी जो उनकी शायरी को देखना चाहता है उनकी इस खूबी की तरफ से आंखे बन्द नही कर सकता। इनकी शायरी की फिजा हिन्दुस्तानी है, बोलचाल की जबान हिन्दुस्तानी है, यहाँ की तहज़ीब में जिस तरह का हुस्न पाया जाता है उसी तरह अन्दाज से भी हिन्दुस्तानी नजाकत जाहिर होती है।

अल्फाज का इस्तेमाल हो या तलफ्फुज, मुहावरों का इस्तेमाल हो या बयान करने का तरीका, हिन्दुस्तानी रंग अपनी खूबी के साथ हर जगह साफ तौर पर हमारे सामने आता है। इनका जन्म तो दिल्ली मे हुआ मगर उन्होंने अपनी पूरी जिन्दगी आगरा में गुजारी।

नजीर अकबर आबादी खुद कहते हैं–

आशिक कहो, असीर कहो, आगरे का है
मुल्ला कहो, दबीर कहो, आगरे का है
मुफलिस कहो, फकीर कहो, आगरे का है
शायर कहो, नजीर कहो, आगरे का है।

यह वो आगरा था जिसके बारे में एहतेशाम हुसैन कहते हैं–

"वही आगरा जो मुगल शहंशाह
अकबर की राजधानी रह चुका था
और जिसके चारों तरफ कृष्ण भक्ती
की वो विष्णु तहरीक फैली हुई थी
जिसने सूरदास और मीराबाई के
गीतों और भजनों को जन्म दिया था,
जहाँ अजीम किला और ताजमहल
खड़े किये गये थे, यहाँ की हवा में
राधा और कृष्ण की मुहब्बत और
भक्ति के गीत गूँज रहे थे। जहाँ से
करीब मथुरा और वृन्दावन के मेलों
और त्यौहारों में शरीक होकर अवाम
के दिल की धड़कन तेज हो जाती
थी।"[1]

नजीर की शायरी में यह सभी रंग बिखरे हुए हैं। शायरी जिन्दगी का अक्स होती है इसलिए जिन्दगी की असल बुनियाद यानी आगरा से अलग हटकर नजीर अकबर आबादी को समझना नामुमकिन है। डा0 अली अहमद फात्मी ने कहा है–

"जो बातें कहीं वो सिर्फ आगरे के
लोगों के लिए न थीं, बल्कि इसमें पूरा
हिन्दुस्तान धड़कता नजर आता
है।"[2]

नजीर अकबर आबादी ने जिस वक्त लिखना शुरू किया तब मीर, गालिब, सौदा, मीर हसन आदि के असरात शायरी में नुमायां थे। ऐसा नहीं था कि नजीर उर्दू शायरी पर पड़ने वाले ईरानी ख्यालात और फारसी जबान के असरात के साथ–साथ मुकामी रंग से पूरी तरह वाकिफ न थे। मगर फिर भी उन्होंने अपना अलग रंग और अलग लहजा अपनाया। उर्दू में एक नई राह निकाली जिसने नजीर को समझने के लिये दरवाजे खोल दिये। उनकी शायरी में सच्चाई, वतन परस्ती, इन्सानी प्रेम और हमदर्दी, आम जिन्दगी से जो वाकिफियत और सादगी मिलती है वो उससे पहले किसी दूसरे शायर के यहाँ नजर नही आती।

अवाम के मसाइल हो या मौसम का मिजाज, तीज त्यौहार या मेला–ठेला, हर रंग अपनी

हिन्दुस्तानी रूह के साथ पूरे तौर पर नजर आता है।

सैय्यद आल–ए–जफर लिखते हैं–

"नजीर उर्दू के पहले शायर है
जिनकी शायरी हिन्दुस्तानी फिजा मे
सास लेती है।"[3]

कृष्ण जी का जन्म है, जन्माष्टमी पूरे ब्रज में धूम–धाम से मनाई जा रही है, बच्चे के जन्म से माता पिता के घर में उजाला हो जाता है। इस रोशनी में उनकी नज्म 'कन्हैया जी' का ये बन्द देखिये–

"है रीत जन्म की यूं होती जिस घर में बाला होता है

5

ग़ज़ल गायकी का बदलता स्वरूप

डॉ0 हुमा मसूद

सारांश –

हर कला का हमारे जीवन और समाज से गहरा संबंध रहा है जैसा समाज होगा वैसी ही कला होगी। ये और बात है कि गज़ल गायकी और संगीत दोनों एक साथ एक कला में उभरते हैं तो उतनी ही तेज़ी के साथ बदलाव आते हैं।

डॉ0 उमा गर्ग के अनुसार–

"आज का हमारा समाज कुछ ऐसी स्थिति में पहुँच गया है कि कोई भी कला इस समाज में पनपने की बजाय विनाश की ओर जा रही है। किसी भी कला या साहित्य के विकास या पतन का ज़िम्मेदार केवल कलाकार या साहित्यकार ही नहीं होता समाज भी होता है। परिस्थिति को बदलने के लिए समाज में एक कांति लाने के लिए वैज्ञानिक समझ की ज़रूरत है। कांति सोचने भर से या कुछ देने भर से नहीं आ जाती यह एक प्रोसेस है। धीरे–धीरे इस क्षेत्र में प्रयास करते करते यह बदलाव आता है।"[1]

ग़ज़ल गायकी और संगीत के इस बदलते स्वरूप को इस प्रकार हमारे समाज की बदलती स्थितियों के संदर्भ में समझा जा सकता है। गज़ल गायकी एक ऐसी कला है जिसकी महत्वता से इंकार नहीं किया जा सकता। ग़ज़ल कहना एक कला है, उसी तरह ग़ज़ल गाना भी एक कला है। ग़ज़ल विभिन्न विचारों का एक गुलदस्ता है। फनकार को विभिन्न रागों, विभिन्न सुरों में उसे बांधना होता है ताकि हर फूल का सौन्दर्य बना रहे। हर पत्ती का रंग प्रदर्शित हो सके। इसी तरह फनकार के लिये शायरी और संगीत के बीच तालमेल बनाये रखना ज़रूरी है। वह गजल के हर शेर की खुशबु को ना सिर्फ़ महसूस करता है बल्कि संगीत के दायरे में रहकर राग के सुरों में भी पिरोता है।

ग़ज़ल गायकी सिर्फ़ सुनने और आनन्द प्राप्त करने की वस्तु नहीं। आज के बदलते वातावरण में ग़ज़ल गायकी ठंडी हवा के एक खुशगवार झौकें की तरह है जो अंदर और बाहर दोनों के मौसमों की घुटन को कम करती है। इसी प्रकार कल्पना की एक अलग प्रकिया है जो चुपचाप धीरे–धीरे संगीत और ग़ज़ल गायक के अंदर जारी रहती है शब्द, अर्थ व लय एक दूसरे से जुड़कर भावपूर्ण ढंग से एक गहरा प्रभाव डालते हैं।

गज़ल और संगीत दोनों का एक ऐसा अटूट रिश्ता है जिसका रंग हर दौर में बदलता तो रहा मगर कभी खत्म नहीं हुआ। कभी कभी कोई मिसरा या गीत, ग़ज़ल का कोई मुखड़ा या कोई राग ज़हन के दरीचों में उभरता है और पूरे व्यक्तित्व को अपनी लपेट में ले लेता है। लेकिन जिस वक्त ग़ज़ल गायक और श्रोता आमने सामने होते हैं तो दोनों के मध्य एक ऐसा अजीब रिश्ता बंध जाता है जो बहुत नाज़ुक, बहुत कीमती होता है। ग़ज़ल गायक अपनी आवाज़ के उतार चढ़ाव के साथ ग़ज़ल में पूरी तरह डूब कर सुरों के द्वारा पलों को कैद करता है। जब साज़ सच्चे सुरों के साथ समय को अपना पाबन्द बनाकर समा बांधता है तो ये वो अनमोल पल होते हैं जिससे सच्चे सुरों की कोपलें फूटती हैं, कला की परख होती है। साज़ और आवाज़ खुद–ब–खुद जीवन की घुटन को बिना कोशिश किये बाहर निकाल फेंकते हैं और इसी तरह एक अच्छी ग़ज़ल आत्मा की ताज़गी का सबब बन जाती है। कला व काव्य को अलौकिक सत्ता से जोडने की भी कोशिश की गयी। डा0 राधा कृश्णन के नज़दीक

"……कविता स्वर्ग में गिरती हुई सुधा धारा नंदन के कुसुमों से टपकी मकरंद की बूंद और अंनत के दिव्य संगीत की स्वर लहरी बन गई। कवि इस लोक का प्राणी नहीं रह गया। वह पार्थिक जीवन से परे पैगमबर, औलिया रहस्य दर्शी बन गया।"[2]

हमारा माहौल, हमारा समाज, हमारा मिज़ाज, हमारी पसन्द और नापसन्द समय के साथ–साथ बदलती रहती है। इसी तरह कला का स्वरूप भी बदलता रहता है। एक महदूद ज़िन्दगी अपने अंदर इल्म और कला के लामहदूद तजुर्बे रखती है। ये तजुर्बे ग़ज़ल के रूप में ढ़लकर सुरों और रागों से सजकर एक नया जादू जगाते हैं और इस तरह शायरी और संगीत एक दूसरे के लिये ज़रूरी हो जाते हैं। शेर के लिये वज़्न और काफिया का होना जरूरी है। बिल्कुल इसी तरह बोल के लिये राग ज़रूरी है। अरस्तु ने शायर को "सनअतगर" और वज़्न को शेर की कसौटी माना है।

ग़ज़ल का हर शेर एक इकाई होता है। गज़ल में कम से कम 5 और 11 से अधिक शेर नहीं होने चाहिए। गजल का अपना एक ढंग है, शेर के दो सम चरण 'मिसरा' कहलाते हैं। शेर में

ISSN - 2231 - 5837 www.ijscjournal.com Journal Impact Factor No. : 6.410
RNI - UPBIL / 2011 / 38102
This International P eer-Reviewed & Ref ereed Journal
is available in Print as well as Online

Indian Journal of Social Concerns

इण्डियन जर्नल ऑफ सोशल कन्सर्न्स

A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES
(An International Peer-Reviewed & Refereed Journal)

Volume - 10 : Issue - 44 Oct. - Dec. 2021 Gaziabad

Guest Editor
Dr. Kiran Mishra
Chief Editor
Dr. Hari Sharan Verma
Editor
Dr. Rajnarayan Shukla
Managing Editor
Dr. Sangeeta Verma

(A RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES)

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ स.
45.	"बौद्ध धर्म दर्शन एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता"	डॉ0 रजत गंगवार	168–171
46.	Ecotourism Industry In The World For Resources Conflicts And Environmental Preservation	Dr. Vinai Kumar Shanna and Dr. Amit Agrawal	172–176
47.	"फर्रुखाबाद के वंगश नबाब एवं 1857 की क्रान्ति में उनकी भूमिका"	डॉ0 रजत गंगवार	177–181
48.	Construction of Integrated Indian Market By Goods And Services Tax (gst)	Dr. Vinai Kumar Shanna and Dr. Amit Agrawal	182–185
49.	काव्य में सौंदर्य विषयक दृष्टिकोण	डॉ0 अर्चना शर्मा	186–189
50.	इस्माईल मेरठी की नज्मों में आचार्य कौटिलय के नैतिक तत्त्वों का वर्णन	डॉ0 हुमा मसूद	190–195
51.	Human Rights, Its Evolutions And Role of Human Rights Commission of India	Dr. Renu Chaudhary	196–197
52.	वील्होजी की सामाजिक चेतना	सुषमा भारद्वाज	198–199
53.	सादा जीवन उच्च विचार के विग्रह : देशरत्न	डॉ0 राजेंद्र प्रसाद डॉ0 पुष्पा रानी	200–201
54.	कालिदास के काव्यों में राजनीतिक संबंधी मंत्रिपरिषद् संगठन	सरोज	202–203
55.	'विवेकानन्द का जीवन–दर्शन एव संदेश	डॉ0 जंगबहादुर पाण्डेय	204–206
56.	अभिज्ञानशाकुन्तलम और रघुवंश में विवाह	सरोज	207–208
57.	कोशिश कहने की' गज़ल संग्रह की समीक्षा	डॉ० प्रवेश कुमारी	209–210
58.	"Environmental Imbalance: Policy and Challenge"	Dr. Vimla Devi	211–213
59.	भारतीयसमाजे नारीणां वैशिष्ट्यम्	डॉ0 पूनम रानी	214–215
60.	लेखिका–डॉ0 आरती लोकेश	डॉ0 निधि अग्रवाल–पुस्तक समीक्षक	216–216

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ स.

50

इस्माईल मेरठी की नज़्मों में आचार्य कौटिलय के नैतिक तत्त्वों का वर्णन

डॉ0 हुमा मसूद

सारांश–

ज़िन्दगी का मज़हर ''शब्द'' है, ज़िन्दगी के इज़हार का ज़रिया ''शब्द'' है, ज़िन्दगी की इन्तिहा ''शब्द'' है और ''शब्द'' एक निर्माता है। ज़िन्दगी आगे बढ़ी तो इन्सान की सूरत में पैदा हुई। ज्ञान ज़रिया बना इन्सान और हैवान में फर्क करने का। यह ज्ञान सीना–ब–सीना होता हुआ जब नस्लों तक पहुँचा तो तहरीर की शक्ल इख़्तियार की। सीना–ब–सीना पहुँने वाली मालूमात के मुकाबले में तहरीर ने न सिर्फ़ अमूल्य वृद्धि की बल्कि ज्ञान जीवन की वो सच्चाई बनकर उभरा जिसकी बदौलत काग़ज और कलम की महत्ता बढ़ी। लिखा हुआ शब्द बोले हुए शब्द से ज़्यादा ज्ञान के ख़ज़ाने में वृद्धि का सब्ब बना जो लिखा न जा सका वो मौजूद भी न रह सका। शब्द कल भी अमूल्य थे और हमारा मार्ग दर्शन कर रहे थे। और आज भी हमारी राहों को तारीकी से दूर कर रहे हैं। शब्द एक ऐसा इतिहास रचते हैं जिसकी रोशनी में हम आसानी से आगे का मार्ग तय कर सकते हैं।

जैसे–जैसे ज्ञान बढ़ा कारामद मालूमात हासिल करना आसान हुआ। यह काम धर्म का हो या दुनिया का दोनों को हासिल करने अनुभवों के साथ–साथ शोध करने के लिए हिम्मत, हौसला, मेहनत और लगन का होना ज़रूरी है। इन सबके साथ–साथ खुलुस शामिल ना हो तो ज्ञान में वृद्धि नहीं हो सकती। इस हक़ीकत से इन्कार मुमकिन नहीं जब जब ज्ञान बढ़ा और फैला समाज में बदलाव आया।

''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।'' इस पुरानी कहावत की महत्ता और अर्थ से हम आज भी इन्कार नहीं कर सकते। क्योंकि मनुश्य जिस समाज में जीवन व्यतीत करता है उसी से हर चीज़ सीखता है और कभी भी खुद को समाज से अलग नहीं कर सकता। यह समाज ही चरित्र को बनाता, निखारता और संवारता है तो वह सही शब्दों में इन्सान बनाता है। राजनीतिज्ञ हो या दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक हो या इतिहासकार कवि हो या लेखक आदि हर एक का जीवन उसकी परवरिश इसी समाज में सम्भव है। यह अलग बात है कि इन्होंने अलग अलग ढंग से मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि की है। जीवन के उतार चढ़ाव से प्रभावित होकर जीवन की सच्चाईयां परत दर परत उनपर खुलती जाती हैं। उनकी ज़िन्दगी में प्रतिदिन हमेशा और हर लम्हा बदलाव आते रहते हैं। जब हम सृष्टि के इतिहास पर नज़र डालते हैं तो यह बात खुलकर सामने आ जाती है कि यूनान, मिस्त्र, रोम इरान व अरब की सभ्यता हो या सिन्ध आर्य, बुद्धमत, हड़प्पा और मोहन जोदड़ों की सभ्यता आदि। यह सब उन्नति पाकर इन्सानी ज़िन्दगियों में इस हद तक रच बस गई कि उनका रूख़ ही बदल डाला। हिन्दुस्तान एक ऐसा मुल्क है जहां इन सभी सभ्यताओं का संगम नजर आता है। कौसर मज़हरी के अनुसार–

'दूसरे मुल्कों की तहज़ीबों की तरह हिन्दुस्तानी तहज़ीब में बदलाव होते रहे हैं और मुख़्तलिफ तहज़ीबों के धारे इसमें आकर मिलते रहे हैं। हर समाज में कई माशरती तहें होती हैं जो अपने अन्दर अपनी ख़ासी तहज़ीबें लिए होती हैं।''[1]

इन तहज़ीबों के प्रभाव हम उन पलों में खोज सकते हैं जो एक इतिहास सृजित कर गये। यह गौरवपूर्ण इतिहास हमारा आर्दश, मार्गदर्शक ही नहीं बल्कि प्रेरणा का स्रोत्र था और आज भी भारतीय समाज के लिये एक महत्व रखता है। ऐसा ही एक बहुआयामी व्यक्तित्व आचार्य चाणक्य का है। उन्होनें जो कहा वह इतिहास तो बना ही, आज भी उसकी महत्ता में कमी नहीं। उनका कहा हुआ एक एक शब्द आज भी हमारा मार्ग दर्शक है, उनकी ''चाणक्य नीति'' उनके राजनीति के सिद्धान्त एक महान राष्ट्र के निर्माण में आज भी उपयोगी हैं। जिसे जानकर कोई भी जीवन के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है। आचार्य चाणक्य ने विभिन्न विषयों पर जो कुछ कहा वह सामाजिक हो या राजनीतिक, आर्थिक व कुटनीतिक, धार्मिक हो या लोक व्यवहार से संबंधित अपने अनुभवों की रौशनी में कहा। जिनकी प्रसगिंता से इन्कार नहीं। वह कल भी महत्वपूर्ण व उपयोगी थे और आज भी हम उनसे अमूल्य फ़ायदा उठाकर सफ़लता प्राप्त कर सकते हैं। आपके मुंह से निकले शब्द किस तरह चरित्र निर्माण में सहायक सिद्ध होते हैं। इस बात का अन्दाज़ा आचार्य के प्रेरणाप्रद सूत्रों से बाआसानी लगाया जा सकता है। यह सूत्र चरित्र बनाते हैं। चरित्र बनता है अमल से, अमल आता है ज्ञान से, ज्ञान मिलता है ज्ञानी लोगों या गुरू की अच्छी शिक्षा व अच्छी सोहबत से। गुरू के हृदय में स्थित विद्या को सेवाकर एक शिश्य किस प्रकार प्राप्त कर सकता है। इस पर आचार्या ने निम्न शब्दों में प्रकाश डाला है–

''खनित्वा हि खनित्रेण भूतले वारि विन्दति
तथा गुरूगतां विद्यां शुश्रूशुरिधगच्छति''[2]

जिस प्रकार खुदाई करने वाला व्यक्ति पृथ्वी के

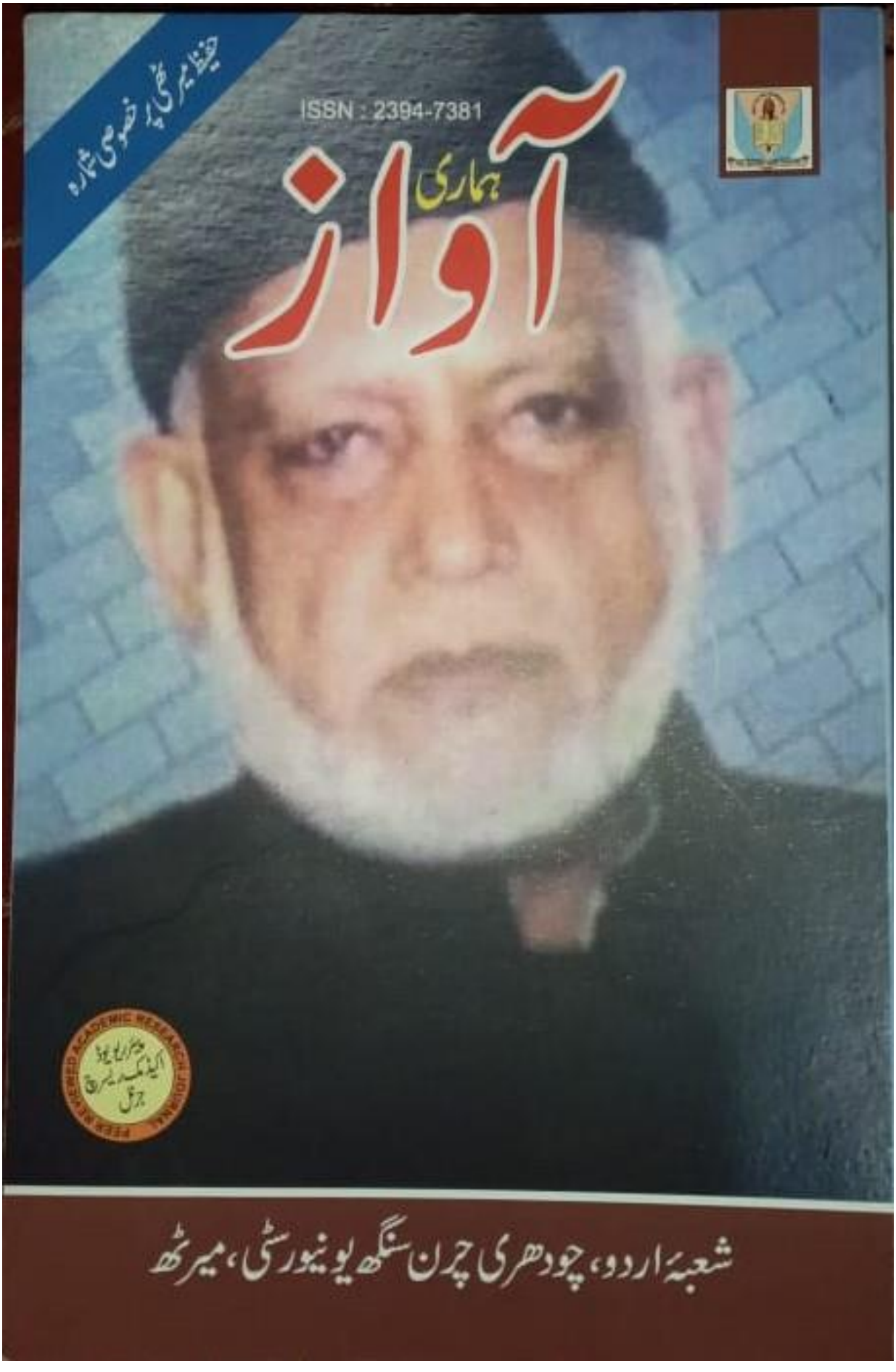

حفیظ میرٹھی پر خصوصی شمارہ

ISSN : 2394-7381

ہماری آواز

PEER REVIEWED ACADEMIC RESEARCH JOURNAL
پیئر ریویوڈ اکیڈمک ریسرچ جرنل

شعبۂ اردو، چودھری چرن سنگھ یونیورسٹی، میرٹھ

حفیظ کی شخصیت ان کی شاعری کے حوالے سے	سید مصباح الدین احمد	115
حفیظ میرٹھی کی نعت گوئی	انوار الحسن ارسطو	118
حفیظ میرٹھی کا شعری انفراد	ڈاکٹر یونس غازی	121
حفیظ میرٹھی کی نعتیہ شاعری	ڈاکٹر ہما مسعود	129
انسانی قدروں کا امین: حفیظ میرٹھی	ڈاکٹر فرحت خاتون	136
'جتنی شمعیں تھیں' ایک تاثر	ڈاکٹر آصف علی	140
غزل کا مزاج داں: حفیظ میرٹھی	ڈاکٹر شاداب علیم	145
بلند فکر و فن کا خوددار شاعر: حفیظ میرٹھی	ڈاکٹر ارشاد سیانوی	153
سچائی کا بے باک ترجمان: حفیظ میرٹھی	انیس میرٹھی	161
آبروئے میرٹھ: حفیظ میرٹھی	ڈاکٹر ابراہیم افسر	164
عزم، استقلال کا شاعر: حفیظ میرٹھی	ڈاکٹر محمد مستمر	172
حفیظ میرٹھی آثار و افکار	ڈاکٹر خالد ظہیر	177
فکر و احساس کا شاعر: حفیظ میرٹھی	ڈاکٹر فرقان احمد سردھنوی	182

منظوم خراجِ عقیدت

حفیظ میرٹھی ایک مجاہد	نایاب زہرہ زیدی	187
شانِ میرٹھ حفیظ میرٹھی	ڈاکٹر یونس غازی	188
حفیظ میرٹھی میری نظر میں	نذیر میرٹھی	188
منتخب کلام حفیظ میرٹھی		190
تبصرے	ڈاکٹر شاداب علیم، ڈاکٹر ارشاد سیانوی	204
شعبۂ اردو کی ادبی و ثقافتی سرگرمیاں		210
شعبۂ اردو کی کامیابی کے اٹھارہ سال		233
شعبۂ اردو میں آنے والے مہمانوں کے تاثرات		237
ربط باہم		240
اشتہارات		242
ہندی سیکشن		1-36

• • •

ڈاکٹر ہما مسعود

حفیظ میرٹھی کی نعتیہ شاعری

نعت گوئی ایک مقدس صنف سخن ہے، حضور اکرم ﷺ کی ذات مقدس سے والہانہ عقیدت اور عشق کا جذبہ جب بیدار ہو جائے تو اکثر یہ نئے تیوروں کے ساتھ ابھرتا دکھائی دیتا ہے اور جب کوئی فن کار اس والہانہ محبت کا اظہار اپنے فن میں کرتا ہے تو ساری بندشوں کو توڑ کر ایک الہامی کیفیت پیدا ہوتی ہے، جو باطنی اور وجدانی کیفیت سے دو چار کرتی ہے، معنی کی نئی نئی پرتیں کھلتی ہیں، نعت گوئی کی بنیاد یہی عقیدت اور محبت ہے۔

نعتیہ شاعری حضور اکرم ﷺ کی تعریف وتوصیف اور حیات طیبہ کو اپنے نظریہ سے دیکھنے، سمجھنے اور نئے معنی پہنانے کے عمل کا نام ہے، آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی حیات وسیرت کے ہر نکتے اور ہر مقام سے آگاہ ہونا ہر کس وناکس کے بس کی بات نہیں ہے۔ کسی شاعر کا اپنے اشعار میں رحمت اللعالمین کی مدح سرائی کے ساتھ شخصیت کے گوشے وا کرنے کی کوشش اور آنحضرت ﷺ کی عظمت، مقام ومرتبہ تک رسائی، آسان کام نہیں، آنحضرت ﷺ کی حیات مبارکہ کا ہر لمحہ بنی نوع انسان کے لیے ایک نمونہ ہے، چنانچہ ایک عظیم، لاثانی شخصیت کو تخیل کے ذریعہ جلا بخشنا اور تاریخی حقیقتوں کو نئے سرے سے زندہ کرنا نعتیہ شاعری کا ایک امتیازی وصف ہے۔

شعرائے عرب سے نعت گوئی کا آغاز ہوا جو فارس تک پہنچا بعد ازاں اردو نے اس روایت کی پیروی کرتے ہوئے فن کو وسعت اور ہمہ گیری بخشی، اس حقیقت سے انکار ممکن نہیں کہ اردو شعراء نے نعت گوئی میں نہ صرف طبع آزمائی کی بلکہ اپنی ندرت فکر سے نئے نئے معنی بھی پیدا کئے، قلی قطب شاہ، وجہی، ولی دکنی، سراج اورنگ آبادی، ابن نشاطی، سودا، میر درد، مومن، اقبال، امیر مینائی، حسن کاکوری وغیرہ نے حضور اکرم ﷺ کی رفعت وعظمت کو شعری سانچے میں ڈھالا اور اس وسیع میدان میں اپنی شناخت بنائی۔

حفیظ میرٹھی نے بھی اس صنف سخن میں طبع آزمائی کی اور اپنی ندرت فکر سے نئے معنی پیدا کرنے کی کوشش کی، آپ کی نعتوں میں روایتی نعتیہ شاعری کا عکس بھی ہے اور تاریخی بصیرت بھی اور اسلام سے گہری واقفیت بھی۔ انہوں نے عاجزی، انکساری اور عقیدت ومحبت سے نہ صرف حضور اکرم ﷺ کی تعریف وتوصیف بیان کی بلکہ حیات طیبہ کے مختلف گوشوں کو نیا آب ورنگ بخش کرنا قابل فراموش بنا دیا۔ حفیظ میرٹھی عصر حاضر کے مسائل، اس کے تقاضوں اور اپنی ذمہ داریوں کا پورا احساس رکھتے ہیں۔ بحیثیت ایک باشعور انسان اور بیدار مغز فن کار عصر حاضر کے انسان کو کبھی نصیحت کرتے ہیں تو کبھی طنز کا نشانہ بنا کر اپنی

ISSN : 2394-7381

ہماری آواز

اکیسویں صدی کی دو دہائیوں کا فکشن نمبر

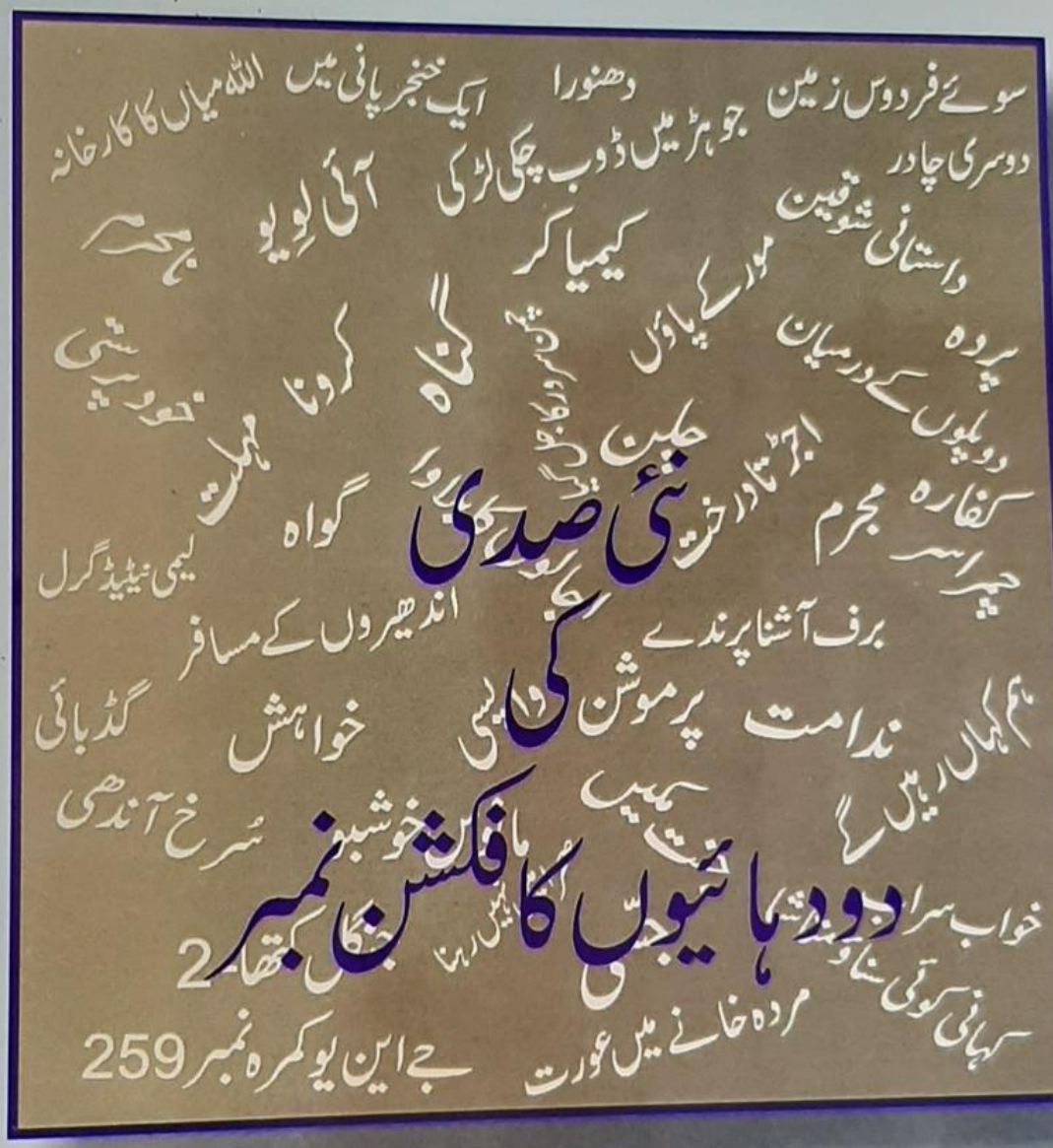

شعبۂ اردو، چودھری چرن سنگھ یونیورسٹی، میرٹھ

ہماری آواز

نئی صدی کی دو دہائیوں کا اردو فکشن

جلد:19 شمارہ:02 (2020-21) سمسٹر IV-II

سرپرست اعلیٰ : پروفیسر این کے تیجا (شیخ الجامعہ، چودھری چرن سنگھ یونیورسٹی، میرٹھ)
سرپرست : پروفیسر وائی وملا (نائب شیخ الجامعہ، چودھری چرن سنگھ یونیورسٹی، میرٹھ)
پروفیسر نوین چندلوٹی (ڈین فیکلٹی آف آرٹس، چودھری چرن سنگھ یونیورسٹی، میرٹھ)
مدیر اعلیٰ : پروفیسر اسلم جمشید پوری
مدیر : ڈاکٹر ارشاد سیانوی
ایڈیٹوریل بورڈ : ڈاکٹر آصف علی، ڈاکٹر شاداب علیم، ڈاکٹر انکا وششٹھ، تسلیم جہاں، فرح ناز
: شوبی زہرہ نقوی (ریسرچ اسکالر) علما ملک (ایم۔اے سال دوم) شہانہ خاتون، ثمانہ (ایم۔اے سال اول)
کمپوزنگ : محمد شمشاد (سی، سی، ایس، یونیورسٹی، میرٹھ)
قانونی مشیر : پروفیسر انجلی متل (ڈین فیکلٹی آف لا، سی، سی، ایس، یو، میرٹھ) ڈاکٹر محمد شعیب (ایڈووکیٹ)
مجلس ماہرین : EXPERT PANNEL

☆ پروفیسر یوسف عامر (وائس چانسلر جامعہ ازہر، مصر)
☆ پروفیسر ارتضیٰ کریم (ڈین فیکلٹی آف آرٹس، ڈی یو)
☆ پروفیسر محمد غلام ربانی (ڈھاکہ یونیورسٹی، بنگلہ دیش)
☆ پروفیسر ظفر الدین (مانو، حیدرآباد)
☆ پروفیسر کوثر مظہری (جامعہ ملیہ اسلامیہ، دہلی)
☆ پروفیسر ریاض احمد (جموں یونیورسٹی)

قیمت: خاص شمارہ: -/Rs. 400 مجلد: -/450 بیرونی ممالک 10 امریکی ڈالر 20 سعودی ریال
ناشر: پروفیسر اسلم جمشید پوری

شعبۂ اردو: چودھری چرن سنگھ یونیورسٹی، میرٹھ
URL: http://ccsuniversity.ac.in/ccsu/adminSdept/
duccsumrt@gmail.com, aslamjamshedpuri@gmail.com,
muhammadshamshadinfo@gmail.com
Mobile: 09456259850, 9759238472

Leser Typesetting at: Frontech Graphics, 9818303136

ناول (اقتباسات)

1- اللہ میاں کا کارخانہ (محمد محسن خان) 139
2- دھنورا (اسلم جمشید پوی) 146

فکشن پر مضامین

ہم عصر فکشن کا تاریخی و تہذیبی تناظر — پروفیسر آفتاب احمد آفاقی (بنارس) 157
اردو فکشن اور دوحہ قطر — فریدہ نثار احمد انصاری (قطر) 162

افسانے پر مضامین

بنگلہ دیش میں افسانے کا پس منظر — پروفیسر غلام ربانی (بنگلہ دیش) 167
اکیسویں صدی کے اردو افسانوں میں... — ڈاکٹر اجے مالوے (الہ آباد) 173
رامپور میں اردو افسانہ کا مستقبل — ڈاکٹر محمد اطہر مسعود (رامپور) 185
اگر منٹو ہوتے — بشیر مالیر کوٹلوی (مالیر کوٹلہ) 189
نئی کہانی سمت و رفتار — خورشید حیات (چھتیس گڑھ) 194
نیا اردو افسانہ اور دلت احتجاج — شوبی زہرہ نقوی (مظفر نگر) 201
اکیسویں صدی اور اردو افسانہ — محمد علیم اسماعیل (ناندیر) 211
اکیسویں صدی کا سماج اور اردو افسانہ — راحت علی صدیقی قاسمی (کھتولی) 218
جاوید انور (بنارس) — تحریک ادب کی خدمات.... 223
پروفیسر اسلم جمشید پوری (میرٹھ) — نئی صدی کا اردو افسانہ: صورت حال... 228

کچھ اہم افسانوں کے تجزیے

خشک پتوں کی موسیقی — شائستہ فاخری — پروفیسر صالحہ رشید 238
لاک ڈاؤن سے لاک اپ تک — سلیم خان — ڈاکٹر ہما مسعود 244
کہانی کا دوسرا رخ — مہتاب عالم پرویز — ڈاکٹر شاداب علیم 251
جدید لب و لہجے کا غماز افسانہ 'عقرب' — اویناش امن — ڈاکٹر آصف علی 255
سسکیاں — سلمٰی جیلانی — ڈاکٹر ارشاد سیانوی 263
آرگن بازار — سلمٰی صنم — محترمہ گلناز 267
آدھی ادھوری کہانی — اسلم جمشید پوری — حقانی القاسمی 271

8- بے بسی — اسرار گاندھی — پروفیسر اسلم جمشید پوری 274
9- عباس نے کہا — جیلانی بانو — ڈاکٹر عفت ذکیہ 276

باب افسانہ

1- جوہڑ میں ڈوب چکی لڑکی — مستنصر حسین تارڑ (لاہور) 284
2- دوسری چادر — انجم عثمانی (دہلی) 292
3- اجڑ تا درخت — ارمان شمسی (بنگلہ دیش) 295
4- چمن سرور کا جل گیا — اے خیام (کراچی) 299
5- سوئے فردوس زمین — عارف نقوی (جرمنی) 308
6- سُرخ آندھی — نگار عظیم (دہلی) 317
7- گڈبائی — رومانہ رومی (کراچی) 319
8- پرموشن — شکیل احمد خان (کراچی) 324
9- مور کے پاؤں — کہکشاں پروین (رانچی) 339
10- صحرا میں نہیں رہنا — تبسم فاطمہ (دہلی) 343
11- گواہ — عشرت ناہید (لکھنؤ) 350
12- مانوس خوشبو — عشرت معین سیما (جرمنی) 356
13- گلہ قصائی — ریاض توحیدی (جموں کشمیر) 361
14- جنگل کتھا-2 (سوال) — اسلم جمشید پوری (میرٹھ) 364

نئی آوازیں

1- آئی لو یو — فہیم (لندن) 369
2- کیمیا گر — تنویر احمد تماپوری (ریاض) 372
3- اجالوں کا بلاوا — ولا جمال العسیلی (مصر) 376
4- کرونا — افشاں احمد (جرمنی) 379
5- ہم کہاں رہیں گے؟ — رشید جہاں انور (جمشید پور) 384
6- واپسی — ناصر آزاد (مالیر کوٹلہ) 387

ڈاکٹر ہما مسعود
میرٹھ

لاک ڈاؤن سے لاک اپ تک

ادب کی تمام اصناف میں افسانہ ایک ایسی صنف ہے جو نہ صرف انسان کی اجتماعی اور انفرادی زندگی بلکہ عصری صداقتوں سے ہم آہنگ ہو کر ہماری آگہی میں اضافہ کر رہی ہے۔ نئے موضوعات، نئے افکار و مباحث کو نہ صرف قلم بند کر رہی ہے بلکہ حقیقتوں کی مکمل اور مفصل تصویر پیش کر رہی ہے۔ کورونا موجودہ عہد کا وہ المیہ ہے جسے انسانی تاریخ کبھی فراموش نہیں کر پائے گی۔ اس کے نتائج اتنے مہلک اور شدید ہیں جس کا احساس و ادراک پوری دنیا کر رہی ہے۔ اس کے ساتھ ساتھ فطرتِ انسانی میں در آنے والی تبدیلیاں نسلوں کو متاثر کر جائیں گی۔ دیگر ہونے والی تحقیقات اور تجربوں کے ساتھ ساتھ یہ انسانی فطرت کے کھرے اور کھوٹے، اپنے اور پرائے، ہمدردی اور خود غرضی سبھی جذبوں اور رشتوں کو پرکھ کر الگ کر دینے والی وبائی بیماری ہے۔ اردو افسانہ نگاری پر اس کے اثرات اور ردِ عمل جس انداز سے نمایاں ہیں وہ خاص طور سے قابلِ توجہ ہیں۔ ڈاکٹر سلیم خاں کا افسانہ "لاک ڈاؤن سے لاک اپ تک" کورونا سے پیدا شدہ حالات کے پس منظر میں لکھا گیا افسانہ ہے۔ جس فضا اور جس ماحول میں یہ افسانہ تخلیق ہوا، آغاز سے ہی واقعے کی تمام تفصیلات اپنے اندر سمیٹے ہوئے ہے۔ افسانہ موضوع اور ہیئت کے اعتبار سے مختلف ہے۔ دوٹوک انداز میں بنا کسی لاگ لپٹ کے افسانہ نگار نے افسانے کے مخصوص کینوس میں ہندوستان کا سیاسی ماحول، مذہب کی بنیاد پر انسانوں کی تقسیم، میڈیا کا رول، ابتر حالات، کاروبار ٹھپ ہو جانا، بے روزگاری، فاقہ کشی کی نوبت آنا، روزمرہ زندگی کے سارے ہی کاموں کا بند ہو جانا، خوف و دہشت، بے یقینی اور بے اعتمادی کی حالت، سوشل میڈیا کے ذریعے پھیلائی گئی ایک مخصوص فرقے کے تئیں منافرت اور ہندوستانی عوام کی ان سب سے متاثرہ ذہنیت کو بخوبی پیش کیا ہے۔ یہ کہانی ایک متوسط گھرانے سے وابستہ کردار جمال کی ہے جو انسانیت کے جذبے سے مغلوب ہو کر بس اسٹاپ پر لیٹے بجو کے انسان کی مدد کرتا ہے مگر جس صورتِ حال سے وہ دوچار ہوتا ہے وہ قابلِ فکر ہے۔ افسانہ نگار نے موجودہ وقت کے ایک اہم ترین موضوع کو افسانہ بنا کر اپنی عصری حیثیت کا ثبوت دیا ہے۔

پوری دنیا میں کورونا کی وبا پھیلی ہوئی ہے اور یہ کہانی اپنے اندر ان تمام حالات اور حادثات کو سمیٹے ہوئے ہے جن سے لاکھوں لوگ متاثر ہوئے، کوارنٹین ہوئے، لاک اپ کی ہوا کھائی، اسپتال پہنچے اور لاکھوں ہی لقمۂ اجل بن گئے۔ اور ابھی ہواؤں میں پھیلے وبا کے جراثیم نہ جانے کتنوں کو متاثر کریں گے۔

ایک عجیب افراتفری کا عالم ہے۔ کوئی مستقبل کے متعلق پیشن گوئی کر رہا ہے۔ کوئی اپنی جگہ مکمل بے یقینی اور بے اعتمادی کی حالت میں گرفتار ہے۔ ایسے جاں گسل وقفوں سے گزرتے لوگ سیاسی چالوں اور میڈیا کے ذریعے پھیلائی گئی جھوٹی افواہوں کے دور سے گزر رہے ہیں۔ اسی ماحول میں ایسے لوگ بھی ملتے ہیں جو انسانی رشتوں سے جڑے رہنا پسند کرتے ہیں۔ دوسروں کی ضرورتوں اور ان کے دکھ درد کا احساس رکھتے ہیں۔ انسانی ہمدردی اور خدمت کے جذبے سے بھرے ہوئے ہیں۔ یہاں تک کہ اپنی جان کی بازی تک لگا بیٹھے ہیں۔

ایسے لوگ بھی ہیں جو خود غرض، نام نہاد شہرت پانے کے لیے کچھ بھی کر گزرنے کو تیار رہتے ہیں۔ یا اقتدار کا نشہ انہیں انسانیت سے دور کر دیتا ہے اور وہ حالات اور واقعات کا رُخ اپنی مرضی کے مطابق موڑنا بھی جانتے ہیں اور ان کو اپنے سیاسی مفاد کی خاطر استعمال کرنا بھی انھیں خوب آتا ہے۔ تہذیب، مذہب اور سیاست کے نام پر فرقہ پرستی کو فروغ دینا اور اپنے سیاسی ہتھکنڈوں سے فضاؤں کو زہر آلود کرنا ان کا مقصد ہوتا ہے۔ کہانی کا پلاٹ وبا کے پورے پس منظر کے ساتھ پھیلا ہوا ہے۔

کہانی میں ضمنی طور پر کئی کردار پیش کیے گئے ہیں لیکن کچھ خاص کردار ایسے ہیں جو افسانے کے مرکزی خیال کو پیش کرنے میں معاون ثابت ہوئے ہیں۔ لاک ڈاؤن کے اعلان نے ایک متوسط گھرانے کے افراد کی طبیعتوں پر مختلف اثر ڈالا جن کو افسانہ نگار نے بڑی فنکاری سے کرداروں کے ذریعے نمایاں کیا۔ اس تیز رفتار دنیا میں کمی ہے تو صرف وقت کی، ایک ساتھ مل بیٹھنے کی۔ جمال کے والد کمال صاحب خوش ہیں کہ لاک ڈاؤن کے بہانے ہی سہی گھر کے لوگ ایک ساتھ جمع ہیں۔ ان کی اہلیہ افسری بیگم خوش ہیں کہ ان کی ٹیچر بہو جو ہزار بہانوں سے اپنے آپ کو گھریلو کاموں سے الگ تھلگ رکھے ہوئے تھی۔ لاک ڈاؤن کی بدولت پہلی بار اُس سے خدمت لینے کا موقع ملا۔ ورنہ ان کے لیے آرام اور خوشی کا وقت وہ ہوتا جب بہو بچوں سمیت چھٹی ہوتے ہی میکے چلی جاتی اور ان کی بیٹیاں سسرال سے آکر ماں باپ کی خدمت خوشی خوشی کرتیں۔ سب سے زیادہ خوش جمال تھا جو ایک بین الاقوامی کمپنی میں کام کرتا ہے۔ صبح سے شام تک مصروف رہنے کے بعد بھی کچھ نہ کچھ کام بچ جاتا۔ کورونا کی وبا نے وقت کا پہیہ روک کر اسے دل کے ارمان نکالنے کا موقع فراہم کر دیا۔ "گھوڑے بیچ کر سوتا" یوٹیوب پر من پسند ویڈیوز دیکھتا۔ فون اور فیس بک پر "ماضی کے دھندلکے" میں کھوئے دوستوں سے رابطے استوار کرتا۔ بچے خوش تھے اسکول، ٹیوشن اور امتحان سے نجات ملی اور اگلی کلاسوں میں بھی پہنچ گئے۔ سب خوش تھے سوائے جمال کی بیوی جمیلہ کے۔ اس لاک ڈاؤن نے مندر، مسجد، پارلیمنٹ، عدالت، سرکاری ادارے، اسکول، کالج، ٹرینیں، بسیں، ہوائی جہاز، کارخانے، کمپنیاں، جہاں سب کو متاثر کیا اور کارخانۂ زندگی مفلوج کر دی وہیں ایک عورت (جمیلہ) کی زندگی مفلوج نہیں ہوئی اس کے کام بند نہیں ہوئے۔ حالات سازگار تھے تو وہ گھر اور نوکری کی دہری ذمہ داریاں نبھاتی رہی۔ نوکری کے بہانے ہی سہی وہ گھریلو ذمہ داریوں سے تھوڑا بچ جاتی تھی یا چھٹیوں میں

Dr Deepti Kaushik

GOVT. OF INDIA- RNI NO. UPBIL/2014/56766
UGC Approved Care Listed Journal
ISSN 2348-2397

SIE

Shodh Sarita

An International Multidisciplinary Quarterly
Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

• Vol. 7 • Issue 27 • July to September 2020

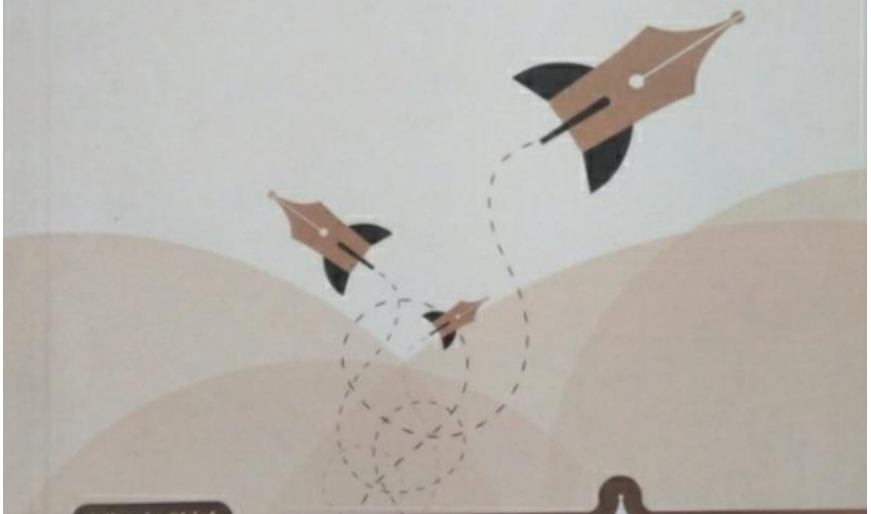

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

CONTENTS

S. No.	Topic		Page No.
1.	ACHIEVING PERFORMANCE OUTCOMES : MEDIATING ROLE OF RELATIONSHIP QUALITY IN SUPPLY CHAINS	Sharon Lee Jose	1
2.	RIGHT TO INFORMATION (AMENDMENT) ACT, 2019 : PROPITIOUS OR SINISTER	Dr. Vikash Kumar Upadhyay Mr. Arpit Sharma	9
3.	"ROLE OF PATIENTS" A STUDY OF PATIENTS IN THE SOCIOLOGICAL PERSPECTIVE	Vishal Kumar Lodhi Dr. Deepti Kaushik	16
4.	MAJOR FINANCIAL SOUNDNESS INDICATORS FOR INDIAN BANKING SECTOR – AN EVALUATION	Vivek Shankar	20
5.	'THE STATUS OF MUSLIM WOMEN IN HIGHER EDUCATION IN THE POST-SACHAR SCENARIO : INITIATIVES, ACHIEVEMENTS AND CHALLENGES'	Dr. Sayyada Begum	25
6.	BEHAVIORAL CHANGES IN CLARIAS BATRACHUS DUE TO EXPOSURE OF ENDOSULFAN	Santosh Kumar	31
7.	2019 LOK SABHA ELECTIONS IN HARYANA : EXPLAINING THE VERDICT	Dr. Sunil Devi Kharb	34
8.	COMPARATIVE STUDY ON FINANCIAL PERFORMANCE (CASH FLOW STATEMENT) OF STATE BANK OF INDIA AND ICICI BANK	Kamal Kumar Agarwal Dr. Hanuman Prasad Malonia	40
9.	MAGIC REALISM AND THE PERVERSION OF INNOCENCE IN SALMAN RUSHDIE'S SHALIMAR THE CLOWN	Dr. Md Aurangzeb Alam	45
10.	MINI GRIDS : SMART POWER FOR RURAL INDIA	Saania Sondhi Prof. J.P. Yadav	49
11.	LEGISLATIONS RELATING TO THE LEASE OF AGRICULTURAL PROPERTY IN PUNJAB	Sandeep Kaur	59
12.	Risk Management and Surveillance System : Integration and Completeness	Sunil Kumar Tiwari Dr. Hanuman Prasad Malonia	64
13.	An Intuition towards Reincarnation of Illustration	Shrinivas S. Dudhgaonkar Prof. K D Joshi	74
14.	ANALYZING SOCIO-ECONOMIC IMPACT OF LENDING BY REGIONAL RURAL BANKS ON RURAL COMMUNITY IN PANDEMIC SITUATION: A CASE STUDY OF RMGB	Ms. Pinki Sharma Dr. J.P. Yadav	82

ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE
SIE
SHODH SARITA
SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 27, July-September, 2020
Page Nos. 16-19
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

"ROLE OF PATIENTS" A STUDY OF PATIENTS IN THE SOCIOLOGICAL PERSPECTIVE

Vishal Kumar Lodhi*
Dr. Deepti Kaushik**

ABSTRACT

Patient engagement has been defined in various ways. We define it as "the actions people take for their health and to benefit from health care" Beyond this general definition, the literature on patient engagement points either to patient behaviours that improve health care at various levels or to interventions aimed at engaging patients. Overall, two assumptions appear to underlie the literature on patient engagement. First, the patient engagement includes only those patient activities that are in line with health practitioners' prescriptions and implicitly excludes attitudes or activities that raise contestation and resistance.

Keywords : Patients, Disease, Medicine, Physicien, Sick Role, Treatment

Aninereasing Proportion of Medical practice is now taking Plane in the context of organization. To a large extent this is necessitated by the technological development of medicine itself, above all the heed for technical facilities beyond the reach of the individual Practitioner and the fact that treating the same case often involves the complex cooperation of severer different kinds of Physicians as well as of auxiliary personnel. This greatly others the relation of the physician to the rest of the instrumental complex. He tends to be relieved of mush responsibility and hence necessarily of freedom, in relation to his **Patients** other than in his technical **role** "Being sick" constitutes a social role at all-isn't it simple a state of fact, a "condition" (Parsons, 1951: 436).

There seem to be four aspects of the institutionalized expectation System relative to the **sick role.**

First, is the exemption from normal socials role s responsibilities, which of course is relative to the nature and severity of the illness?

The Second closely related aspect is the nstitutionalized definition that the sick person cannot be expected by "Pulling himself together" to get well by an act of derision or will. In the sense also he is exempted from responsibility he is in a condition that must be taken care of his condition must be changed not merely his attitude.

The third element is the definition of the state of being ill as itself undesirable with its obligation to want to "get well". The first two element of legitimation of the sick role are conditional in a highly important sense. It is a relative legitimating so long as he is in the unfortunate state which both he and alter hope he can geo out of as expeditiously as possible. Finally, the **fourth** closely related element is the obligation in proportion to the severity of the condition, of course of seek technically competent help, namely, in the most t hat of a physician and to cooperate with hi s of trying to get well-it is here of cours the sock person as patient becomes arti at of the Physician in complementary role structure (Parsons. 1951; 436-437).

The **role** of Motivational factors in illness immensely broadens the scope and increases the

Research Scholar - Department of Sociology, INPG College Meerut
*Associate Professor & Head - Department of Sociology, INPG. College Meerut

UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 2.314 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 7, No. 12 December, 2020

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by

VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh

email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

Impact Factor : 2.31
ISSN : 2393-835

अनुक्रमणिका

	The Constitutional Development of Panchayati Raj Institutions in India: After Independence to 73rd Constitutional Amendment Act 1992 **Dr. Het Ram Thakur**	1-6
	भारत–ब्राजील लोकतांत्रिक वैश्विक शासन की ओर **डॉ0 विकास वर्मा**	7-10
	अकबर की धार्मिक सहिष्णुता की नीति एवं अन्य धर्मों से सम्बन्ध **डॉ0 शशि कुमार ओझा**	11-15
	21वीं सदी की समसामायिक प्रवृत्तियों का भारतीय संगीत पर प्रभाव : एक विवेचन **डॉ0 भूपेन्द्र कुमार**	16-18
	चम्पूभारतम् के परिप्रेक्ष्य में रस–वर्णन **प्रियंका एवं प्रो0 (श्रीमती) राजिन्द्रा शर्मा**	19-24
	रोहतास जिला के आर्थिक विकास में पर्यटन को बढ़ावा देना एक स्तम्भ के रूप में **डॉ0 रामनाथ सिंह एवं सविता सिंह**	25-29
	ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में मौर्यकालीन शासन व्यवस्था का संक्षिप्त अवलोकन **सुधीर कुमार रस्तोगी**	30-34
	बनास बेसिन (म0प्र0) भौमिकी की विशेषताओं का क्षेत्रीय विश्लेषण **डॉ0 श्याम दत्त दूबे**	35-39
	End of Tragedy is to Show the Dignity of Man **Dr. Umar Farooque**	40-42
	Ramlila in Colonial Delhi; Site of 'Devotion and Entertainment' **Manish Panwar**	43-46
	मार्कंडेय पुराण में निहित एकेश्वरवाद **संतोष कुमार द्विवेदी एवं डॉ0 बी0एल0 जैन**	47-48
	प्राचीन साहित्य में वर्णित शक्ति पूजा **डॉ0 नीलम कुमारी केशरी**	49-50
	Socio-Economic Background and Health Awareness in Adolescence : A Sociological Study **Dr. Deepti Kaushik & Hema Pal**	51-56

UGC Approved Journal No. 48416
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 7, No. 12, December, 2020

Impact Factor : 2.314
ISSN : 2393-8358

Socio-Economic Background and Health Awareness in Adolescence : A Sociological Study

Dr. Deepti Kaushik
Associate Professor, Head of Department, I.N. (PG) College, Meerut
Hema Pal
Research Scholar, Deptt of Sociology, I.N. (PG) College, Meerut

Abstract

This research is based on Rural Area Fazalpur is town in Meerut district in the state of Uttar Pradesh. Fazalpur is located on Rohta Road. Fazalpur situated 1 km in Meerut city Railway Station and 58 km in North from capital Delhi. Total population of Fazalpur is 17,926 according census 2011.The majority 55% belong to the young age group of (17-19), OBC caste, graduate are Labourer, live in joint family, (large family size)and belong to low income (5,000-10,000).The Majority of the respondent expressed that they feel discrimination in mobility, education, marriage time, way of behavior, healthy food, health care facility. One-fifth 20% of the respondents give milk and milk products. 35% girl. Majority 59% of the respondents give first preference to boys in food. 38% of the mother are bias in take healthy food. The majority of respondents, do not receive similar health care to boys and girls. Majority 57% of the respondents give first preference to boys in health care, and give second preference to girls, Majority 56% of respondents agree that boys receive more Health care, 40% of the respondents agree that mother is more bias in health care.

Keywords: - Medical Sociology, Health, Family, awareness, illness, socio-economic conditions etc.

Introduction

Medical Sociology brings sociological perspectives, theories, and methods of the study of health and medical practice. Medical sociology is a branch of sociology which addresses a wide range of key issues and specially the interplay between social factors and health the field of medical sociology is a sub discipline of sociology which attempts to analyze social actions and social factors in illness and illness related situations with a view of making it possible for all involved in the illness situation to appreciate the meaning and implication of any illness episode (Cockerham, 1998:1).

Medical sociology is the subfield which applies perspectives, conceptualizations, theories and methodologies of sociology to phenomena having to do with human health and disease (wiss, 2000:1).

Medical sociology brings sociological perspectives, theories and methods of the study of health and Medical practice. Medical sociology is branch of sociology which addresses a wide range of key issues and specially the interplay between of key issues and specially the interplay between social factors and Health. Medical sociology was established as a specialized field initially in the United States during the 1940 s. The first use of the term medical sociology had appeared as early as 1894 in an article by Charles MC Entire on the importance of social factors in health other early work included essay on the relationship between medicine and society in 1902 by Elizabeth Blackwell, the first woman to graduate from medical school in America and James War bass in 1909 (Cockerham, 2001:3).

Objectives of the study

In the light of the above mentioned frame work the following objective will be undertaken-

1. To delineate the socio-economic profile of the adolescent.
2. To know the awareness of the adolescents towards discrimination.

Dr. Shivali Agrawal

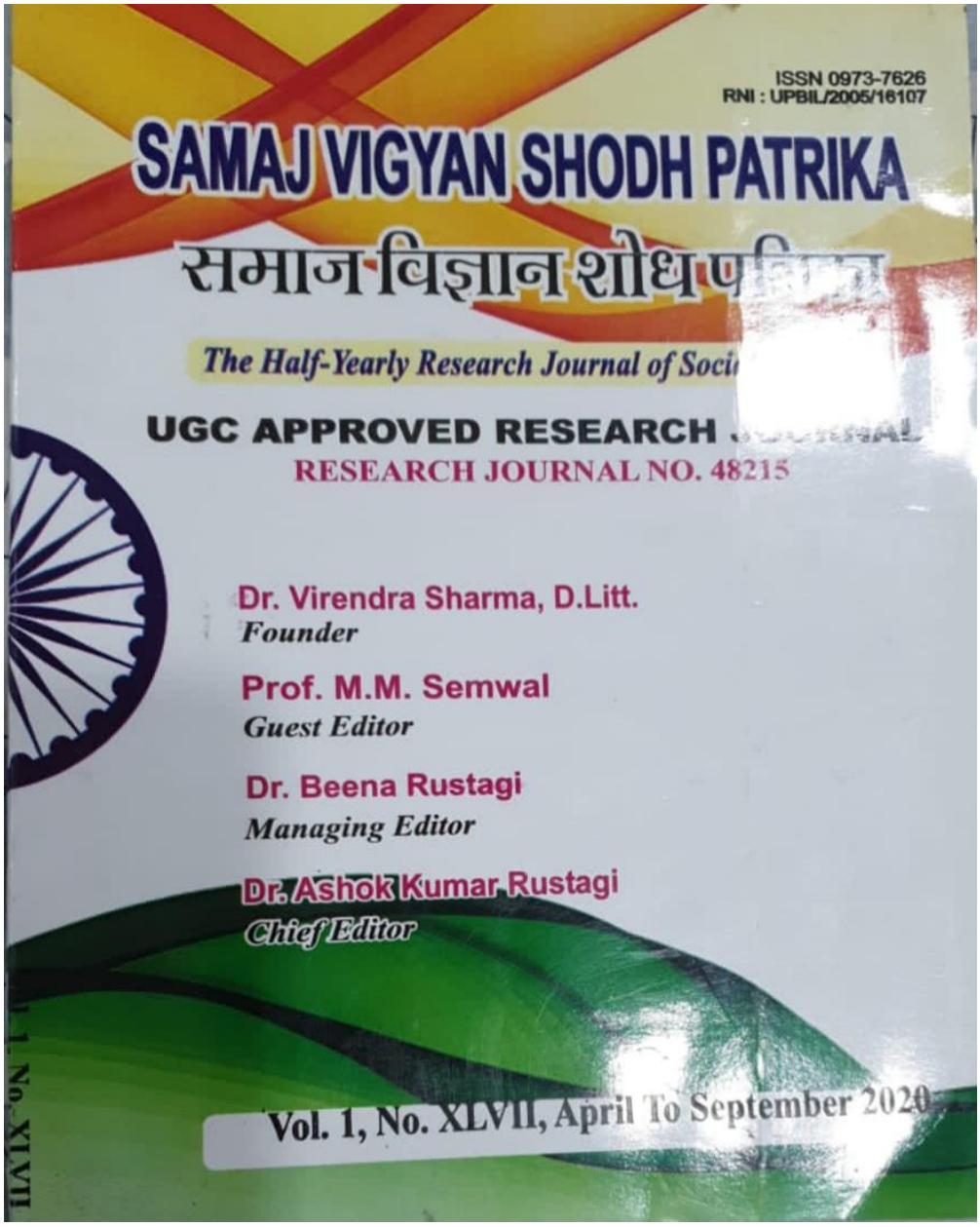

ISSN 0973-7626
RNI : UPBIL/2005/16107

SAMAJ VIGYAN SHODH PATRIKA

समाज विज्ञान शोध पत्रिका

A PEER REVIEWED REFERED RESEARCH JOURNAL

मानविकी एवं समाज विज्ञान की अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका

E-mail : samajvigyanshodhpatrika@gmail.com

UGC APPROVED RESEARCH JOURNAL

RESEARCH JOURNAL NO. 48215

Vol. 1, No. XLVII

April To September 2020

Dr. Virendra Sharma, D.Litt.
Founder

Prof. M.M. Semwal
Guest Editor

Dr. Beena Rustagi
Managing Editor

Dr. Ashok Kumar Rustagi
Chief Editor

The Half-Yearly Research Journal of Humanities & Social Sciences

Published From : ARYAWART BHAWAN, Mbd. Gate, AMROHA (U.P.) 244221

14. वर्तमान समय के युवाओं के सर्वांगीण विकास में आपराधिक प्रवृतियों एवं जोखिम व्यवहार की भूमिका का अध्ययन/ कु0 प्रतीक्षा, डॉ0 सीमा रानी- 94
15. स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दृष्टिकोण का आलोचनात्मक अध्ययन/ डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह, सुशील कुमार- 98
16. **Independence and Sovereignty/** Miss Anjali Maurya, Dr. Shailendra K. Sharma- 103
17. स्थानीय स्वशासन की सतत् विकास में भूमिका/ कु0 सोनिया वर्मा, डॉ0 शिवाली अग्रवाल- 111
18. 17वीं व 18वीं सदी का भारत- परिवेश व परिस्थितियां/ प्राणेश कुमार पिंकु- 120
19. भारत में अंग्रेजी साम्राज्य का पूर्ववर्ती काल/ ज्योति भास्कर- 132
20. भारत में हिन्दी पत्रकारिता एक ऐतिहासिक अवलोकन/ रामजी ठाकुर- 142
21. पाल राजवंश की धर्म परायणता और दान प्रवृति/ अजय कुमार- 151
22. राजनीति की क्रीड़ास्थली बिहार में असहयोग आंदोलन के विरूद्ध चलाए गए सरकारी दमन चक्र का इतिहास/ राजेश कुमार चौधरी- 156
23. शैव दर्शन में सौरमण्डलीय काल का प्राणीय काल में आगमन/ चन्द्रिका प्रसाद- 161
24. प्रार्थना समाज का प्रभाव/ मनीष चन्द्र मणि- 164
25. त्रिलोचन शास्त्री के लोक जीवन और ग्राम प्रकृति : काव्य मूल्य का निष्कर्ष/ डॉ0 ललिता कुमारी- 168
26. **Branding and CSR : An Overview of Corporate Social Responsibility in Context of Building Brands/** Atul Sharma- 172
27. वैश्विकरण के दौर में भारत : एक अध्ययन/ डॉ0 सोनी कुमारी- 181
28. भारत छोड़ो आन्दोलन और हरिद्वार/ डॉ0 मुनेन्द्र शर्मा- 187
29. **SUBSCRIPTION FORM - 194**

: आग्रहपूर्ण निवेदन :

- ❑ आप चिन्तनशील लेखक हैं। सत्यम् शिवम् सुन्दरम् आपके लेखन का आधार हो; पर तनावग्रस्त लेखन से आप भी बचें, हमें भी बचाएं।
- ❑ किसी भी लेख में उद्भाषित विचारों के लिए सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक की सहमति हो, आवश्यक नहीं।
- ❑ शोधलेख भेजते समय आप स्वयं संतुष्ट हो लें कि उसमें प्रूफ व भाषागत त्रुटियां नहीं हैं तथा सन्दर्भ आदि पूर्णतः ठीक हैं।
- ❑ लेख आपकी मौलिक धरोहर हैं, प्रकाशन के बाद ये हमारी धरोहर हैं, इनका उपयोग हमारी अनुमति के बिना कोई भी न करे।
- ❑ लेखक अपना पता इतना स्पष्ट लिखें, ताकि डाक पहुंचने में कोई असुविधा न हो। साथ ही, अपना फोन नंबर अवश्य लिखें, ताकि आवश्यकता पड़ने पर संपर्क किया जा सके।

धन्यवाद!

Samaj Vigyan Shodh Patrika

ISSN 0973-7626, RNI: UPBIL/2005/16107
Vol. 1, No. XLVII
UGC APPROVED RESEARCH JOURNAL NO. 48215
APRIL TO SEPTEMBER 2020

स्थानीय स्वशासन की, सतत विकास में भूमिका

कु0 सोनिया वर्मा
पी–एच.डी. शोध छात्रा
राजनीति विज्ञान विभाग
इस्माईल नेशनल महिला (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ

डॉ0 शिवाली अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग
इस्माईल नेशनल महिला (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ

स्थानीय स्वशासन का अपना बहुत प्राचीन इतिहास रहा है, परन्तु अपने वर्तमान स्वरूप में यह ब्रिटिश शासन की देन है। भारत में स्थानीय स्वशासन के जनक लार्ड रिपिन हैं। रिपिन द्वारा ही भारत में स्थानीय स्वशासन को ठोस आधार प्रदान किया गया। स्वतन्त्रता पश्चात् भारत सरकार द्वारा भी स्थानीय स्तर पर अनेक प्रयत्न किये गये, जिनमें 74वाँ संवैधानिक संशोधन 1993 का विशेष योगदान रहा। इस संशोधन द्वारा संविधान में 12वीं अनुसूची जोड़ी गयी, जिसमें नगर निकायों से सम्बन्धित 18 विषयों को सम्मिलित कर, इनकी भूमिका को निश्चित किया गया। इनके चुनाव स्वतंत्र एवं निष्पक्ष हों और इनकी वित्तीय स्थिति मजबूत हो, इसके लिए 74वाँ संवैधानिक संशोधन द्वारा राज्य चुनाव आयोग और राज्य वित्त आयोग के गठन की व्यवस्था भी की गई।[1] क्योंकि वर्तमान विशाल राज्यों में केन्द्र के द्वारा शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाना बहुत कठिन है। इसके लिए दो कारण उत्तरदायी हैं– प्रथम, केन्द्र की विस्तृत कार्यसूची के कारण समय का अभाव होना। द्वितीय, कुछ समस्याएँ स्थानीय स्तर की होती हैं, जिनका समाधान स्थानीय स्तर पर किया जा सकता है, जिससे स्थानीय स्वशासन का जन्म होता है।[2] ये संस्थाएँ शासन की कार्यकुशलता में वृद्धि करती हैं।[3]

स्थानीय स्वशासन लोकतंत्र का अभिन्न अंग है। इसके अभाव में हम वास्तविक लोकतंत्र का निर्माण नहीं कर सकते हैं। इसलिए इसे लोकतंत्र का प्राण कहा जाता है। लॉर्ड ब्राइस ने अपनी पुस्तक मॉडर्न डेमोक्रेसी में लिखा है, "लोकतंत्र का सर्वोत्तम जरिया तथा उसकी सफलता की सर्वोत्तम गारंटी स्थानीय स्वशासन की पद्धति है"।[4]

स्थानीय संस्थाओं द्वारा अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से शासन करना स्थानीय शासन कहलाता है। यह शासन छोटे तथा सीमित क्षेत्रों के लिए होता है। आधुनिक प्रजातंत्र के लिए यह तथ्य सामान्य है कि नगर हो या ग्राम, जिला हो या प्रांत, इन सभी स्तरों पर स्थानीय स्वशासन जितना श्रेष्ठ होगा, देश के

Dr. DeepaTyagi

दृष्टिकोण

शिक्षण अधिगम के सिद्धांत एवं अधिगम स्तर–राम विलास यादव 3019
पूर्वमध्यकालीन आर्थिक स्थिति, सामन्तवादी व्यवस्था के सन्दर्भ में–संजय कुमार शुक्ल 3023
शिक्षा, संस्कृति एवं समाज–संजीव कुमार चतुर्वेदी 3026
प्राथमिक शिक्षा का विकास एवं आदर्श व्यवहार–संतोष कुमार पाल 3029
मानव जीवन के व्यवहार में शिक्षा–सुबाष कुमार 3032
शिक्षा: सामाजिक कल्याण के साधन के रूप में–सुरेन्द्र कुमार रजक 3035
भारतीय शिक्षा की समस्याएँ–विजेन्द्र कुमार गुप्त 3040
भारत में उच्च शिक्षा का प्रसार तथा प्रभाव–विकास सिंह 3043
भारतीय सामाजिक व्यवस्था का आधार पुरूषार्थ चतुष्क–डॉ० गिरीश गौरव; राजू रावत 3049
रायपुर के उच्च शिक्षा के छात्रों के बीच शैक्षणिक चिंता, कारण और निवारक उपाय पर अध्ययन–अंकिता चन्द्राकर; डॉ० संगीता एस. धनाढ्य 3057
छत्तीसगढ़ के रायपुर में प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रमों का एक अध्ययन–संजय कुमार साहू; डॉ० रजनी दिवाकरराव शिवनकर 3062
कमलेश्वर के उपन्यासों का विविध परिप्रेक्ष्य–सुरजीत कुमार; डॉ० रामकरन मिश्र 3066
बक्सर जिला में साक्षरता का परिवर्तित प्रतिरूप–राजु कुमार; प्रो० (डॉ०) नरेन्द्र सिंह 3069
राजेन्द्र अवस्थी के कथा-साहित्य में आर्थिक स्वरूप–डॉ० दीपा त्यागी; आशु चौधरी 3073

राजेन्द्र अवस्थी के कथा-साहित्य में आर्थिक स्वरूप

डॉ० दीपा त्यागी

(शोध पर्यवेक्षक) एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग आई. एन.पी.जी. कॉलेज विभाग मेरठ

आशु चौधरी

शोधार्थी, हिंदी विभाग आई. एन.पी.जी. कॉलेज मेरठ

1.1 प्रस्तावना

अर्थ मनुष्य के जीवन को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक माना जाता हैक्योंकि सम्पूर्ण बाहरी आवश्यकताओं व क्रिया-कलापों पर सबसे अधिक प्रभावडालता है। भारतीय संस्कृत में आर्थिक विकास 'पुरूषार्थ' जीवन-दर्शन के माध्यमसे हुआ है जिसमें अर्थ भी एक महान तत्व माना गया है। महान् अर्थशास्त्रीकौटिल्य का मत है कि ''धर्म अर्थ और काम इन तीनों में अर्थ प्रधान है। धर्म औरकाम अर्थ पर निर्भर हैं।''

अर्थाभाव में मनुष्य संकोच, लज्जा, खेद, ग्लानि आदि भावों से ग्रसित होजाता है जिसके कारण समाज में दास-मनोवृत्ति, नैतिक पतन आदि प्रवृत्तियाँविकसित होती हैं और अन्त में सम्पूर्ण समाज के चरित्र गुण नष्ट हो जाने सेअज्ञान रूपी अन्धकार छा जाता है। अर्थाभाव के कारण अंग्रजों के राज्य मेंभारतीय जनता में आत्मनिन्दा, दासप्रियता, परानुकरण आदि तमोभाव आये। अर्थ से विहीन मनुष्य की बुद्धि एवं धारणा शक्ति नष्ट होती है। उसकी सभी क्रियाएँउसी प्रकार नष्ट हो जाती हैं जैसे ग्रीष्म ऋतु में पहाड़ी नदियाँ। यथा-

अर्थेन च विहीनस्य पुरूषस्याल्पमेधस।
उच्छियद्यन्ते क्रियाः सर्वा,, ग्रीष्मेकेकुसरितो यथा।।

अर्थ यद्यपि जीवन का आवश्यक व मूलभूत तत्व है, परन्तु इस तथ्य कोनकारा नहीं जा सकता कि अर्थ उतना ही अर्जित करना चाहिए जितना व्यक्तिमन, वचन व कर्म तीनों से स्वस्थ वसंयमित रहे। इस विशेषताओं का अतिक्रमणकरने पर मनुष्य का नैतिक पतन होना स्वाभाविक है।

इसलिए भारतीय चिन्तकों ने मनुष्य के धन-भाग व उपार्जन की सीमाखींची है ताकि भौतिकता की चमक-दमक में मानवीय मूल्यों को गवां न दें।अर्थशास्त्री कौटिल्य ने भी अर्थ की महत्ता को स्वीकारते हुए कहा है- मनुष्यअपने जीवन में अर्थ, धर्म और काम त्रिवर्ग का सन्तुलित उपयोग करें। हमारेधार्मिक ग्रन्थों में भी अर्थ के संयमित उपयोग पर बल दिया है। एक बार धर्मराजयुधिष्ठिर के पूछने पर- ''हे पितामह। वेद तो धर्म, अर्थ, काम-तीनों की प्रशंसाकरते हैं। अतः आप बताइए की इन तीनों में किसकी प्राप्ति मेरे लिए श्रेष्ठ है?

इसके उत्तर में युधिष्ठिर को भीष्म पितामह धन के सुख को क्षणिक कहकर इसमेंनिर्लिप्त न होने के लिए सचेत करते हैं।"

अर्थव्यवस्था के मुख्य दो पक्ष हैं- कृषि व्यवस्था व उद्योग धन्धे।भारत एक कृषि प्रधान देश है, अतः उसकी सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था कृषि परटिकी है। अंग्रेज प्रशासकों ने निरन्तर अपनी सामंती नीति के द्वारा कृषक वर्ग काशोषण किया। उनके साथ-साथ सेठ,जमींदार वर्ग किसानों का शोषण करके कृषिको जर्जर बना रहे थे। सन् 1908 में प्रकाशित 'सम्प्रतिशास्त्र' नामक पुस्तक कीभूमिका में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं कि- ''हिन्दुस्तान सम्पत्तिहीनदेश है। यहाँ सम्पत्ति की बहुत कमी है, जिधर आप देखेंगें उधर ही आँख कोदरिद्र देवता का कारूणिक क्रन्दन दिखाई पड़ता है।'' प्रत्येक शहर व गाँव मानोंनर कंकालों का समूह था। इस प्रकार के भीषण दुर्दमनीय दारिद्रय को देखकरयह स्पष्ट तौर से ज्ञात हो जाता है कि अंग्रेज भारत के लोगों को सभ्य बनाने याशिक्षा देने नहीं बल्कि उनका शोषण करने आये थे।

तत्कालीन किसानों की विपन्नता और विषमता की स्थिति को देखकरसाहित्यकारों का ध्यान किसानों के नारकीय जीवन व आर्थिक शोषण की ओरगया। किसानों व मजदूरों की आर्थिक विपन्नता की ओर सबसे पहले प्रेमचन्द नेआवाज उठाई। प्रेमचन्दोत्तर काल में भी अनेकानेक साहित्यकारों ने ग्रामीण समाजव कृषक की जीवन दशा का चित्रण किया। राजेन्द्र अवस्थी के कथा-साहित्य मेंतदयुगीन समाज की आर्थिक स्थिति का बड़ा ही हृदयस्पर्शी चित्रण हैं।

1.2 अर्थव्यवस्था व आय के परम्परागत साधन

1.21 कृषि

भारत कृषि प्रधान देश है। भारतीय ग्रामीण समाज का प्रमुख व्यवसाय कृषिहै। यदि देखा जाए तो देश के विकास का मूलाधार कृषि ही है। अधिकांश लोगगाँव में कृषि ही करते हैं लोक जीवन की जीविका का प्रमुख साधन कृषि ही रहाहै। राजेन्द्र अवस्थी के कथा-साहित्य में चित्रित समाज का मुख्य कार्य

Dr Parul Tyagi

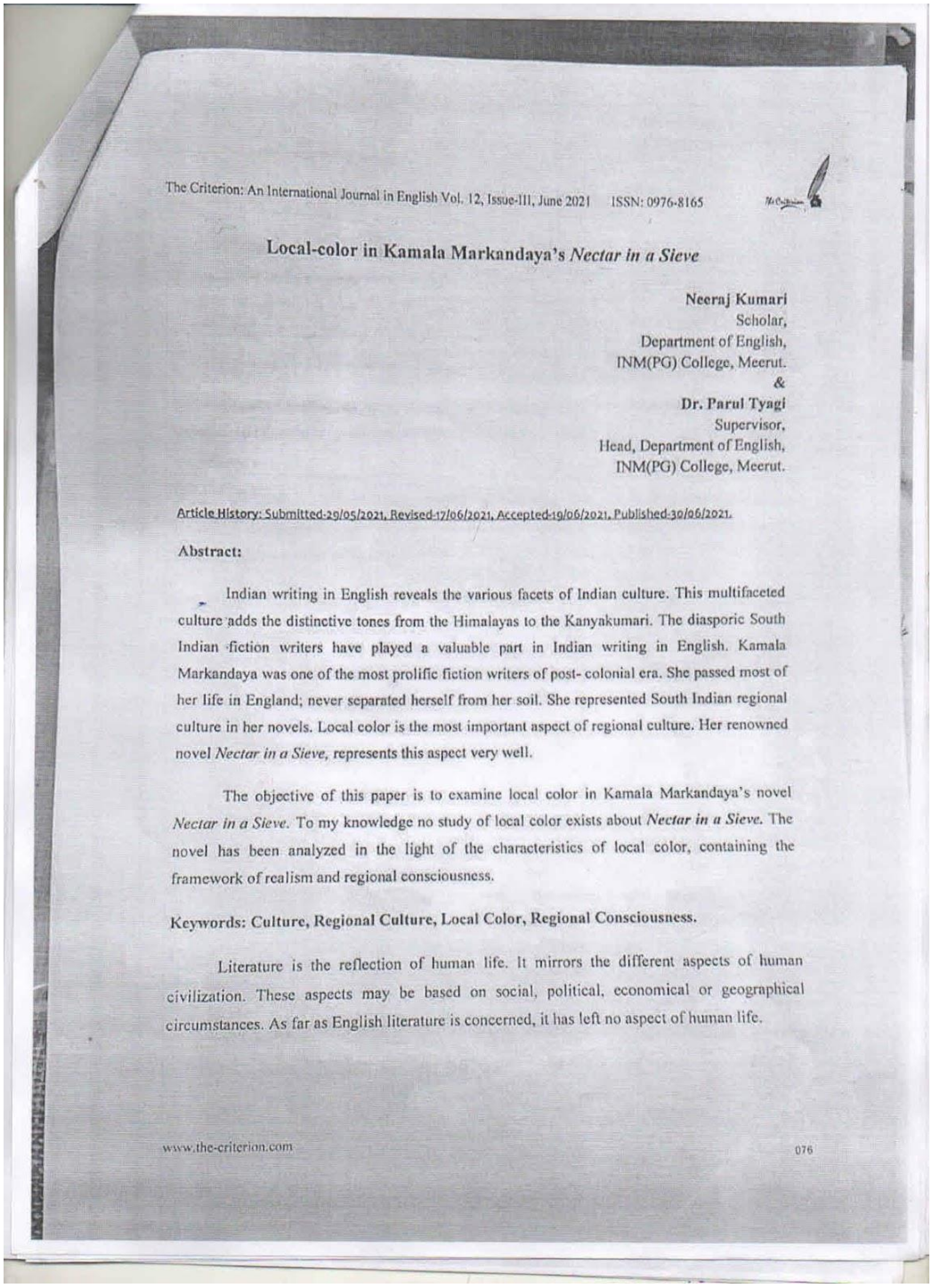

The Criterion: An International Journal in English Vol. 12, Issue-III, June 2021 ISSN: 0976-8165

Local-color in Kamala Markandaya's *Nectar in a Sieve*

Neeraj Kumari
Scholar,
Department of English,
INM(PG) College, Meerut.
&
Dr. Parul Tyagi
Supervisor,
Head, Department of English,
INM(PG) College, Meerut.

Article History: Submitted-29/05/2021, Revised-17/06/2021, Accepted-19/06/2021, Published-30/06/2021.

Abstract:

Indian writing in English reveals the various facets of Indian culture. This multifaceted culture adds the distinctive tones from the Himalayas to the Kanyakumari. The diasporic South Indian fiction writers have played a valuable part in Indian writing in English. Kamala Markandaya was one of the most prolific fiction writers of post- colonial era. She passed most of her life in England; never separated herself from her soil. She represented South Indian regional culture in her novels. Local color is the most important aspect of regional culture. Her renowned novel *Nectar in a Sieve*, represents this aspect very well.

The objective of this paper is to examine local color in Kamala Markandaya's novel *Nectar in a Sieve*. To my knowledge no study of local color exists about *Nectar in a Sieve*. The novel has been analyzed in the light of the characteristics of local color, containing the framework of realism and regional consciousness.

Keywords: Culture, Regional Culture, Local Color, Regional Consciousness.

Literature is the reflection of human life. It mirrors the different aspects of human civilization. These aspects may be based on social, political, economical or geographical circumstances. As far as English literature is concerned, it has left no aspect of human life.

CERTIFICATE

of Publication

www.the-criterion.com

THIS CERTIFICATE IS PRESENTED TO

DR. PARUL TYAGI

For the scholarly research paper entitled
"Local-color in Kamala Markandaya's Nectar in a Sieve"
Published in The Criterion: An International Journal in English
a bi-monthly peer-reviewed open access eJournal
Vol 12, Issue-III (June 2021).

30/06/2021
DATE

Since 2010

SIGNATURE
Dr. Vishwanath Bite
Editor-in-Chief

Dr Mamta Gautam

KAAV PUBLICATIONS ... Stepping into New Horizon
The International Publisher

ISSN: 2348-4349
IMPACT FACTOR (2018):- 8.0121

Kaav International Journal of Arts, Humanities & Social Sciences
(A Refereed Blind Peer Review Journal)

Date:- 12/11/2020

Dear,
Dr. MAMTA
H.O.D. & Physical Education Department,
Ismail National Mahila P.G. College, Meerut

Thank you very much for submitting your Article, entitled **"ART IN OLYMPICS GAMES AND COMMONWEALTH GAMES: A PHILOSOPHICAL PERSPECTIVE"** to the **"KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES: (A Refereed Blind Peer Review Journal), ISSN: 2348-4349".** Your paper has been assigned with an ID of **KIJAHS/OCT-DEC2020/VOL-7/ISS-4** Please refer to this ID whenever you communicate with our Editorial Offices in the future. After a expert double-blind review, I am pleased to inform you that your reviewed manuscript entitled **"ART IN OLYMPICS GAMES AND COMMONWEALTH GAMES: A PHILOSOPHICAL PERSPECTIVE"** been accepted and this Article is scheduled for publication in a forthcoming issue of the Journal of **KIJAHS.**

Founder & Editor-in-chief,
Prof. (Dr.) Kirti Agarwal,
Kaav Publications

KIJAHS V7 (2020) 33-37

Kaav International Journal of Arts, Humanities & Social Sciences
(A Refereed Blind Peer Review Journal)

Art in Olympics Games and Commonwealth Games: A Philosophical Perspective

[1]Dr. Mamta
[1]H.O.D. & Physical Education Department, Ismail National Mahila P.G. College, Meerut

Received: October 11, 2020 **Revised: October 29, 2020** **Accepted: November 12, 2020**

Article Info

ISSN: 2348-4349
Volume -7, Year-(2020)
Issue-04
Article Id:-
KIJAHS 2020/V-7/ISS-4/A07

© 2020 Kaav Publications. All rights reserved

Keywords:

Zart art, Art and Culture, innogration of games. Olympic games, games material, Stadium, Track, medals etc..

Abstract

"The aim of art is to represent not the outward appearance of things, but their inward significance" ARISTOTLE

Linking Zart art with professionalism of games, is a philosophical view point. From psychological point of view to associate Zart art with games is to make path of human development easier. Stabilizing Zart art in Physical Education is a step forward for the people related to Physical Education. Professionalism in Physical Education may have its progress through it.

Technical knowledge of Zart art is related to Universities, Colleges, libraries, Physiotherapy, constructions of Stadium, Innogration encloser of organising games etc. so that students may acquire teaching skills and physical eductors, Coaches etc can make physical, mental, emotional and moral development of youth. Games skills can be combined with curriculum to give rise a new dimension of physical education. By linking this technology, it will lead to developmental research so that development can spread at universal level. How new technology affects games in a country, is a point worth research or it is a comprehensive research area for game artists of a country? How culture and sense of pride of a nation affect other countries and make path for development, is a focal point of this research paper. Today, games are adding 15 professionalism. This art co-ordinates, Olympic games and Common Wealth games. Inclusion of Zart art techniques in games has enhanced new vistas and interesting chapters in making games popular.

Origin of Zart Art Technique

This art originated in 1988. Since then it has been leading to professional development constantly. This is a medium of development of education.

First of all this technique was observed in Beizing Olympic in China. This art shows coordination between different colours, diagrams, colours and skill levels in games.

As an amazing linking force, Zart art has proved itself as a motivational force. Players, Coaches, Managers, Physical educators, Physio-Therapists, Audience and children develop, positive approaches. It also inspires and adds to the positive thinking. In Zart art, diversity of colours takes up to the novelty and games joined with new style to new curriculum. Its utility is constantly increasing at professional level. It is a gift for artists and players. This art was seen in London Olympics and

 Copyright 2020 Kaav Publications

KAAV™ PUBLICATIONS ... Stepping into New Horizon
(The International Publisher)

203, 2nd Floor, Plot No- 7, Aggarwal Plaza, LSC- 1, Mixed Housing Complex, Mayur Vihar Phase 3, Delhi- 110096, India
Visit us at: www.kaavpublications.org; www.kaav.org

Ref No.: KIJAHS 2020/V-7/ISS-4/A07

ISSN: 2348 - 4349
Impact Factor (2018): 8.0121

Certificate of Publication

KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES & SOCIAL SCIENCE

A Refereed Blind Peer Review Quarterly Online Journal (KIJAHS)

This is to certify that

Dr. MAMTA, H.O.D. & Physical Education Department, Ismail National Mahila P.G. College, Meerut

has written an article/research paper on entitled

"ART IN OLYMPICS GAMES AND COMMONWEALTH GAMES:
A PHILOSOPHICAL PERSPECTIVE"

KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, HUMANITIES & SOCIAL SCIENCE KIJAHS 2348 - 4349

Is Approved by the
Review Committee, and is therefore published in (KIJAHS)
In Volume 07 Issue 04 Year 2020

Editor-in-Chief

DR VINETA

IJHSSI
✓ INTERNATIONAL
✓ PEER REVIEWED
✓ INDEXED
✓ REFEREED
International Editorial Board
Published By :
Invention Journals
www.ijhssi.org
ijhssi@invmails.com
International Journal of Humanities
and Social Science Invention
e-ISSN: 2319-7722
p-ISSN: 2319-7714
Volume 9 – Issue 8
(August 2020)
IJHSSI

International Journal of Humanities and Social Science Invention

e-ISSN: 2319-7722 p-ISSN: 2319-7714

Volume: 9 ~ Issue:8 ~ Series-3 August-2020

Contents :

Trade and Urbanisation- India's North East in the ancient Silk Route	01-05
The Influence Of Pupils Ranking In Kenya Certificate Of Primary Education On Examination Cheating In Public Primary Schools In Eldoret Municipality, Kenya	06-10
"Computer Awareness among the Secondary School Students" – A Study	11-19
Racial Disparities in Access to Private Healthcare in South Africa	20-26
COVID-19: Measures of the Austrian government and the perception of the New Generations	27-32
Share of Inheritance in Muslim Community Mandailing Natal (Sociological studies of Islamic law in Mandailing Natal)	33-41
GDP – Inflation – Interest Rate: Nexus in India	42-48
Review of Islamic Law Sociology Concerning Blind Chinese Wedding in Batu Bara District	49-56
Impact of Human Resource Outsourcing on the Performance of Manufacturing Industries	57-60
Role of Media in Women Empowerment	61-64
धनबाद जिला में माध्यमिक शिक्षा के प्रसार हेतु गैर-सरकारी संस्थानों की भूमिका : एक अध्ययन	95-72
An Assessment of Maternal Health and Nutritional Status of Women in the Reproductive Age in the Moradabad District	73-79
व्यावसायिक तनाव और मुकाबला करने के संसाधनों पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रभाव	80-88

International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 9 Issue 8 Ser. III || August 2020 || PP 80-88

व्यावसायिक तनाव और मुकाबला करने के संसाधनों पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रभाव

Dr. Vineta,
Assistant Professor Department of Psychology, Ismail National Mahila P.G College Meerut.

सार

तनाव, आत्महत्याओं और हत्याओं के लिए अग्रणी, भारतीय सीमा सुरक्षा बल के जवानों के सामने प्रमुख समस्याओं में से एक है। कठिन काम करने की स्थिति, बुनियादी सुविधाओं की कमी, लंबे समय तक काम करने के घंटे, परिवार से शारीरिक अलगाव, सख्त नियंत्रण और कठोर स्तरीकृत पदानुक्रम को उच्च स्तर के तनाव का कारण माना गया है। हालांकि, बीएसएफ में तनाव के विभिन्न कारणों का वास्तव में पता लगाने के लिए कोई औपचारिक अध्ययन नहीं किया गया है। वर्तमान अध्ययन में तनाव के कारणों को समझने के लिए क्षेत्र स्तर पर बल में विभिन्न रैंकों के कर्मियों द्वारा प्रदान किए गए इनपुट का उपयोग किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) और व्यावसायिक तनाव के बीच संबंधों को समझना भी था और दोनों के बीच एक नकारात्मक सहसंबंध पाया गया। अंत में, अध्ययन तनाव को कम करने के विभिन्न तरीकों पर चर्चा करता है, जिसमें ईआई दक्षताओं का उपयोग शामिल है, ताकि बीएसएफ कर्मियों के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य में सुधार हो और बल की समग्र दक्षता में सुधार हो सके।

मुख्य शब्द : *व्यावसायिक तनाव; भावनात्मक बुद्धि*

प्रस्तावना

तनाव शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक मांगों के कारण होने वाली गतिशील स्थिति को संदर्भित करता है जिसे एक व्यक्ति द्वारा अपने मैथुन संसाधनों के लिए खतरा और उससे अधिक के रूप में माना जाता है। इससे 'तनाव' हो सकता है जो शारीरिक, मानसिक या व्यवहारिक प्रतिक्रिया या अभिव्यक्ति हो सकता है। व्यावसायिक तनाव (OS) का अनुभव लंबे समय से व्यक्तिगत कर्मचारी और नियोक्ता संगठन के लिए नकारात्मक परिणामों के विकास में फंसा हुआ है। सामान्य भलाई के साथ-साथ संतुष्टि के स्तर और संगठन के प्रति प्रतिबद्धता प्रत्येक को ओएस का अनुभव करने वाले कर्मचारी के परिणामस्वरूप घटते हुए के रूप में पहचाना गया है। कूपर और मार्शल (1978) के अनुसार, काम पर तनाव के प्रमुख कारणों को निम्नलिखित छह श्रेणियों में बांटा जा सकता है:

(1) नौकरी के लिए आंतरिक कारक। इस श्रेणी में खराब काम करने की स्थिति, लंबे घंटे, शिफ्ट में काम, यात्रा, जोखिम और खतरा, नई तकनीक, काम का अधिभार जैसे कारक शामिल हैं, जिससे नौकरी में असंतोष, तनाव, आत्म-सम्मान कम हो सकता है और कई शारीरिक समस्याएं हो सकती हैं।

(2) संगठन में भूमिका। भूमिका अस्पष्टता और भूमिका संघर्ष एक संगठन में तनाव का एक प्रमुख कारण हो सकता है। भूमिका अस्पष्टता तब होती है जब व्यक्ति को अपनी कार्य भूमिका के बारे में अपर्याप्त जानकारी होती है। भूमिका संघर्ष तब होता है जब व्यक्ति परस्पर विरोधी नौकरी की मॉगों से 'फट' जाता है या जब व्यक्ति को वह करने की आवश्यकता होती है जो वह नहीं करना चाहता है

(3) काम पर रिश्ते। गुणवत्ता और सामाजिक समर्थन के संदर्भ में कार्यस्थल में अन्य लोगों (मालिकों, साथियों और अधीनस्थों) के साथ संबंधों को नौकरी से संबंधित तनाव के संभावित स्रोत होने का सुझाव दिया जाता है (कार्टराइट एंड कूपर, 1997)। जिन लोगों के साथ कोई काम करता है, उनके साथ संबंध टूटने से नौकरी की संतुष्टि में कमी और किसी की भलाई के लिए खतरे की भावनाओं के रूप में मनोवैज्ञानिक तनाव हो सकता है।

Dr. Shubhra Tripathi

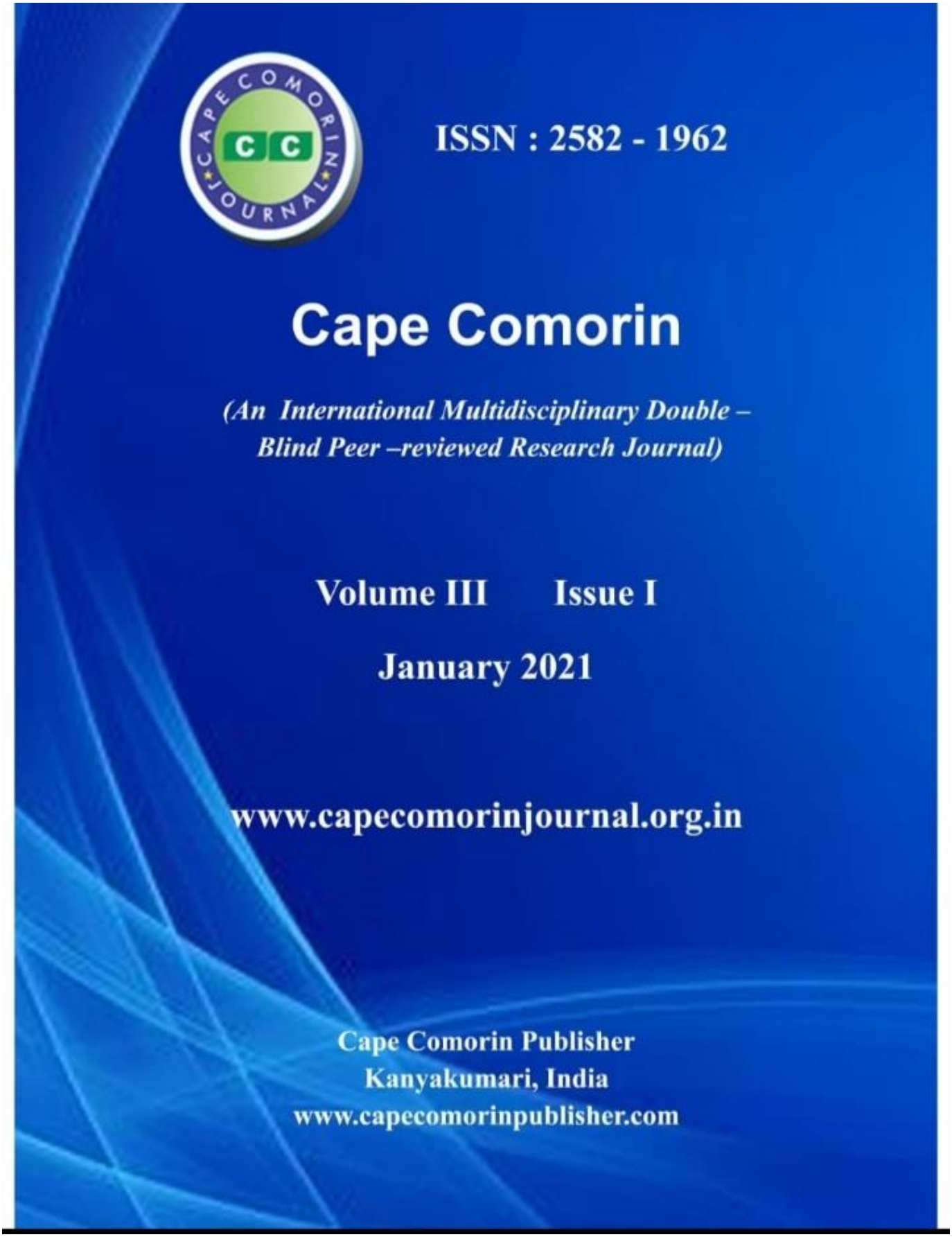

8	**Value Education in Performing Arts: A Study of Values Imbibed in the Disciple by the Guru***Saish S. Nayak Dalal*	PDF
9	**From Ritual to Social Practice: Treatment of Gender in the Songs of the Folk Poet Lalon Shah** *Dr Md. Mamunur Rahman & Sharmin Sultana*	PDF
10	**Writing Short Story Through Movie Learning Strategy in Indonesian Subject** *Muthmainnah, Chuduriah Sahabuddin, et.al*	PDF
11	**Study of Challenges and Prospects of Science Instructions at Secondary Level in Public Schools of Pakistan** *Namra Munir, Rashid Minas Wattoo, et.al*	PDF
12	**An Implementational Strategy towards Sustainable Development in Higher Education Institutes of India: Driving Social Change** *Dr. Shubhra Tripathi*	PDF

An International Multidisciplinary Double-Blind Peer-reviewed Research Journal

An Implementational Strategy towards Sustainable Development in Higher Education Institutes of India: Driving Social Change

Dr. Shubhra Tripathi, Assistant Professor (Sociology) INPG College, Meerut, India
shubhrasocio@gmail.com

Abstract: The concept of Sustainable development aims to protect our environment so that future generation need not to compromise with its necessities. In this context, role of educational institutions becomes very important because not only they are centres of education but also centres of transmission of cultural heritage. Higher education institutes in India can contribute in increasing environmental awareness in youths. Meeting the essential demands regarding sustainable development needs a multidimensional strategy because sustainable development is not limited to environmental preservation only. Apart from preservation, sustainable development demands maintenance, restoration, long and prolific use, effective and inclusive policies, etc. Higher education Institutes can play an important role in sustainable development of any country for which a multidimensional well-built strategy is essential. The present study provides multi-dimensional implementational strategies needed to be practiced in higher education of India so that right attitude and spirit of sustainability is cultivated among the students towards environment. Reducing awareness-behaviour gap through well build content and carefully designed learning strategies is imperative. This measure will not prove effective in isolation. Along with this, various methods concerning institutional structure and its organisation should be implemented to facilitate environmental sustainability efforts.

Keywords: Sustainable Development, Higher Education, Environmental preservation, Pro- environmental practices, Sustainable practices.

Plato says "if you want the child to appreciate and create beautiful things surround him with beautiful things". This statement reveals the potential of young generation to create a beautiful world, when provided with a beautiful and healthy environment. Environment both physical and cultural is a necessary component of human personality building and eventually a healthy society. The interaction between human society and the environment is constantly changing. Severe environmental pollution and degradation is not only affecting our life today but also threatening our tomorrow. Environmental degradation not only hampers personality development but also it affects the quality of life. Thus, development of human society cannot be done by ignoring our environment. The concept of Sustainable development aims to protect our environment so that future generation need not to compromise with its necessities.

Thus Sustainable development encompasses future, along with its present. In this context, role of educational institutions becomes very important because not only they are centres of education but also centres of transmission of cultural heritage. By building up right attitude among students and cultivating spirit of complicity among them, education institutions contribute in making capable and responsible citizens of the country.

Thus, the need of hour is development without destruction. This idea is inherent in the concept of Sustainable Development. Sustainable development is the principle for meeting human development goals while simultaneously sustaining our natural environment. The concept of sustainable development was introduced in its true sense after the World Commission on Environment and Development published The Brundtland report, "Our common future" in 1987.It defined Sustainable development as development that meets the needs of the present without compromising the need of future generations to meet their own needs (The World Commission of Environment and Development, 1987).

Afterwards, next significant conference was held in 1992, in Rio-de-Janeiro, Brazil which was called "The Earth Summit" or "The Rio conference". It witnessed participation from 178 countries. The conference aimed at solving problems of environmental degradation through the concept of Sustainable Development. The Earth Summit resulted in adoption of several principles and agenda, out of which two are of major importance. First, Rio Declaration and second, Agenda 21. Rio Declaration contains 27 principles of sustainable development regarding rights and duties of United Nations, with reference to future policy and decision making related to environment and economic development. Agenda 21 is a global programme with objectives of sustainable development and action plans and resources for their implementation set in 40 chapters (UN DST, 1992.) Agenda 21 aims for the protection and rational use of natural resources. At the same time, it emphasizes the necessity to strive for human development and remove poverty, gender inequality, health problems etc. Chapter 36 of Agenda 21, titled "Education, awareness and training" laid the foundation of Education for sustainable

Dr Swarna

ELT Voices

International Peer-Reviewed Journal

Volume 11, Issue 1 | ISSN 2230-9136

Published by International Society for Educational Leadership (ISEL)

www.eltvoices.com | www.isel.education

The Concept of Truth and Freedom in Ibsen's The Pillars of Society

Ms. Swarna

Assistant Professor, IN PG College, Meerut, India

Abstract

The present paper is an attempt to deal with the significance of truth and freedom in Henrik Ibsen's first prose drama *The Pillars of Society*. Truth and freedom are the central keywords for Ibsen's works because he felt that truth could alone achieve freedom but without truth, there could be no change and no authentic freedom. This was the ideological basis for the quartet of his social problem plays, and the background on which Ibsen conducted the case for progress and the future. In this play, Ibsen has adopted the realistic approach to deal with contemporary problems of bourgeois society. However, the play is built on a fairly simple irony that those who seem as rebels and even criminals are in fact the true carriers of the spirit of truth and freedom and attacks the respectable hypocrisy of society. Actually, the main target of Ibsen is Victorian Society with the façade of false morality and its manipulation of public opinion. In other words, the play deals with the hypocrisy and deceit of a middle-class businessman resulting in his own downfall. Even this bourgeois individual, Consul Bernick sells his love for economical advantages. As a truth seeker, Ibsen examines his lie in public life and the tragic struggle of Bernick to hide his sin and preserve his reputation at the expense of another man's good name that ruins his family's happiness. Ultimately, he confesses all his misdeeds which proves truth and freedom as the true pillars of society.

ELT Voices

International Peer-Reviewed Journal for the Teachers of English

Issue 11.1

April 24, 2021 / Issue 11.1, Volume 11 / Leave a Reply

Volume 11, Issue 1, February 2021
Special Issue: Research papers presented at English Literature Summit 2020

The Condition of Constructing Cultural Identities in Western Texts
Abdelaaziz El Bakkali
ELT Voices, Volume 11, Issue 1, February 2021, Pages 1–17.
View article

इतिहास का सनकी राजा – Critical analysis of the existential identity crisis of Girish Karnad's Tughlaq
Anuradha Pandit, Dhvani Pandya & Aasifa Tufail
ELT Voices, Volume 11, Issue 1, February 2021, Pages 18-27.
View article

The Nationalistic Movement in Indian English Novels: An Overview
Dr. A.K. Patel
ELT Voices, Volume 11, Issue 1, February 2021, Pages 28-33.
View article

Feminism in the Novels of Anita Desai
Asif Majid Khan

…g Image of Women in Indian Writing in English – A Study of Vikram Seth's A …oy

…AL KORI

…oices, Volume 11, Issue 1, February 2021, Pages 128-140.

…ew article

A Character Delineation of Jaya in Shashi Deshpande's That Long Silence

Jay Arvindbhai Ranpura

ELT Voices, Volume 11, Issue 1, February 2021, Pages 141-148.

View article

A Comparative Study of O. Henry and Pannalal Patel's Selected Short Stories

Jayana Gajjar

ELT Voices, Volume 11, Issue 1, February 2021, Pages 149-155.

View article

The Possible Worlds of Electronic Literature: E-Literature in the Service of Foreign Language Teaching

Mgr. Erik György

ELT Voices, Volume 11, Issue 1, February 2021, Pages 156-175.

View article

Music: A Pedagogical Treat in ELT Classroom

Milind M. Ahire

ELT Voices, Volume 11, Issue 1, February 2021, Pages 176-181.

View article

A Feministic Study: Women in Indian Literature in English

Moniza Ray S.P

ELT Voices, Volume 11, Issue 1, February 2021, Pages 182-189.

View article

The Concept of Truth and Freedom in Ibsen's The Pillars of Society

Ms. Swarna

ELT Voices, Volume 11, Issue 1, February 2021, Pages 190-198.

View article

A Critical Analysis of Allusions used in Bob Dylan's Desolation Row

Ms. Viveka Singh

ELT Voices, Volume 11, Issue 1, February 2021, Pages 199-208.

View article

Kamala Das' Rendering of The Second Sex

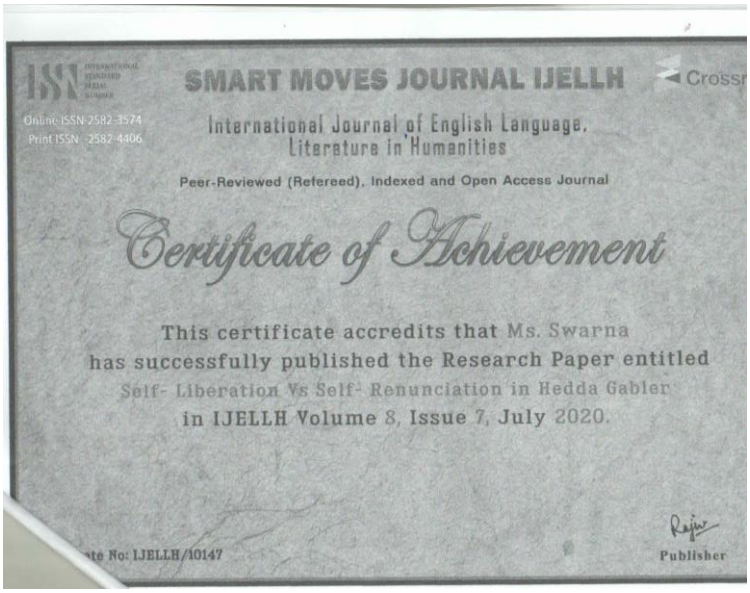

SMART MOVES JOURNAL IJELLH

Online ISSN-2582-3574
Print ISSN -2582-4406

International Journal of English Language, Literature in Humanities

Peer-Reviewed (Refereed), Indexed and Open Access Journal

Certificate of Achievement

This certificate accredits that Ms. Swarna
has successfully published the Research Paper entitled
Self- Liberation Vs Self- Renunciation in Hedda Gabler
in IJELLH Volume 8, Issue 7, July 2020.

te No: IJELLH/10147

Publisher

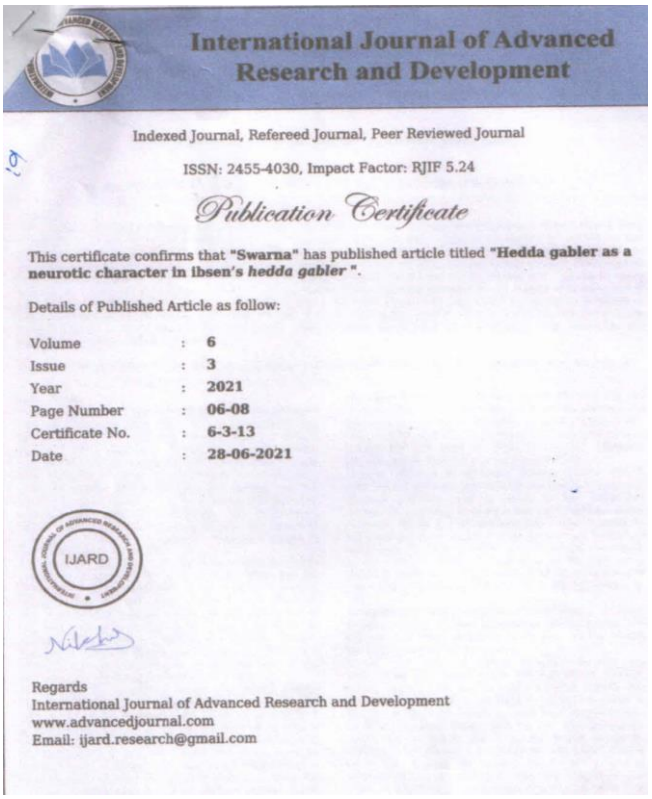

International Journal of Advanced Research and Development

Indexed Journal, Refereed Journal, Peer Reviewed Journal

ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24

Publication Certificate

This certificate confirms that **"Swarna"** has published article titled **"Hedda gabler as a neurotic character in ibsen's *hedda gabler* "**.

Details of Published Article as follow:

Volume	:	**6**
Issue	:	**3**
Year	:	**2021**
Page Number	:	**06-08**
Certificate No.	:	**6-3-13**
Date	:	**28-06-2021**

IJARD

Regards
International Journal of Advanced Research and Development
www.advancedjournal.com
Email: ijard.research@gmail.com

...ivanced Research and Development

...ournal of Advanced Research and Development
...030; Impact Factor: RJIF 5.24
...0-08-2020; Accepted: 05-09-2020; Published: 21-09-2020
...ancedjournal.com
...e 5; Issue 5; 2020; Page No. 10-12

Heredity and environment in Henrik Ibsen's ghosts

Swarna[1], Ravindra Kumar[2]

[1] Research Scholar, Department of English, C.C.S. University, Meerut, Uttar Pradesh, India
[2] Associate Professor, Department of English, C.C.S. University, Meerut, Uttar Pradesh, India

Abstract

Henrik Ibsen, the believer of Naturalism and Darwinism has succeeded in presenting the social problems which are mostly least thought about in an appropriate manner. He turned the theatre from a place from which the audience emerged with a compulsive feeling to reconsider basic principles which they had never before seriously questioned. His enduring greatness as dramatist is not due to his technical innovation, but due to the depth and subtlety of his understanding human character. The approach, to the analysis of Ibsen's characters in his plays is indeed that of Naturalism that uses detailed realism to suggest that social conditions, heredity and environment have inescapable forces in shaping human characters. In *Ghosts* he even managed to do without a plot in the conventional sense of the terms. Ibsen's contemporaries saw *Ghosts* as a play about physical illness and failed to see what it was really about. The play is about the devitalizing effect of dump acceptance of convention.

In fact, Oswald's very illness could be a symbol of the dead customs and traditions which cripple us and lay waste to our lives. Thus, all human beings are presented as entrapped in their social milieu and determined by "inevitable laws of heredity and environment" in the plays of Ibsen.

Keywords: naturalisms, Darwinism, heredity and environment, dead customs and traditions, social milieu

Introduction

Henrik Ibsen (1828-1906) is often considered as one of the founders of Modern Realist or Naturalist Drama in revolt against the romantic drama and the well-made plays. In his hands the theatre began to move towards a naturalistic mode of performance and away from romanticism because it dealt with social issues, problems and realities of life. In this manner, he was the indisputable leader in the campaign of a modern radical and realistic literature in the culture of Scandinavia and of his age and he most powerfully challenged the nations and beliefs of his time and shattered the illusions of his audience. In his words Ibsen allows the individual to engage in a much more radical encounter with society, institutionalized authorities or in a community where people find happiness merely by virtue of existence.

Having himself suffered all his life under conservation of Norwegian provincialism, Ibsen found that such a society destroys the 'joy of life' in its creative intellects leaving bitterness and frustration. Ibsen's Chief interest from the beginning to the end of his career was not with the propagation of ethical ideas but with the solution of ethical problems. Ibsen's attention was, thus, chiefly drawn to those problems stemming from the inhibitions set upon individual freedom and self-realization by social and institutional forces: by commercial hypocrisy, religious intolerance, political expediency, and all the accumulated pressures of conventional morality and established authority. With the passing of time, he became more and more engrossed by the ways of the individual mind, by the clash of personal temperament, by the endless and tragic conflict between the calls of duty and search for happiness within the individual psyche.

Ibsen is supposed to be much influenced by Darwin's theories, which have several significant implications. The first, heredity and environment are made the determinants of existence. The second, heredity and environment become explanations for all characters' traits and actions. Furthermore, since behaviour is determined by factors beyond the individual's control, he cannot be blamed for it. Then, this becomes the concept of modern drama, that is, however a man survives against the heredity and environment, it does not change anything. Everything is determined by social reality. This is completely different from the concept of previous works, of course, as it hold the characterisation of *Ghosts* and obviously described the society at the age of Ibsen.

Ibsen depicted the life of his time and made use of the ideas of his time, he had no desire to change those ideas, nor even in the main to criticize them. In *Ghosts,* he even managed to do without a plot in the conventional sense of the terms. Ibsen's contemporaries saw *Ghosts* as a play about physical illness and failed to see what it was really about. The play is truly about the "devitalizing effect of a dumb acceptance of convention". In fact, Oswald's very illness could be a symbol of the dead customs and traditions which cripple us and lay waste to our lives.

The main aim of the present paper is to deal with the concept of inherited conventions and old beliefs through inherited disease in *Ghosts.* It was written and published in 1881 and staged in 1882. Originally titled- 'Gengangere', it means 'the revenants', 'the again walker', or 'the ones who come back' in Norwegian language. Its English title - *Ghosts* suggests not just the continuing influence of a dead father over the son, discerning in his hereditary disease, but also those dead beliefs and ideas which continue to exert their impact on coming generation. This play deals with the issues like incest, sexuality transmitted disease, illegitimate pregnancy, marriage for the wrong reasons and the role of

International Journal of Advanced Research and Development
www.advancedjournal.com
ISSN: 2455-4030
Received: 29-05-2021, Accepted: 13-06-2021, Published: 28-06-2021
Volume 6, Issue 3, 2021, Page No. 06-08

Hedda gabler as a neurotic character in ibsen's *hedda gabler*

Swarna
Assistant Professor, Department of English, INM PG College, Meerut, Uttar Pradesh, India

Abstract
The present paper attempts to deal with psychological study of Henrik Ibsen's neurotic character Hedda Gabler. Henrik Ibsen is considered as the 'Father of Modern drama' with innovative technique and realistic touch marked his superiority and excellence. He is also the trend setter in mingling 'psychological realism' and 'social realism' which gives a new insight into the characters of the play because his emphasis is not on incident and action but on human psychology which is determined by heredity and environment which helps the readers or audiences to understand the self and the society best. Naturalistic issues and women's questions were central points in his plays through portraying some powerful female characters in the model of New Woman. *Hedda Gabler* is the finest example in which the major focus is on deep-rooted psychological problems or issues of its heroine Hedda Gabler. Throughout the play, it can be noticed how Hedda's obsession with freedom and free will conflict with the norms of nineteenth century society which surrounds her, leading her to manipulate those around her, and finally her own death or self-renunciation.

Keywords: psychological realism, social realism, human psychology, new woman, freedom and free will, self-renunciation

Introduction

Ibsen's greatness as a modernist is not due to his technical innovation but to the depth and subtlety of his understanding of human characters (especially female characters). Ibsen's treatment of women was influenced by 19th century Scandinavian women's right and movements. Thus in some plays Ibsen has presented his women as bold, revolutionary, powerful, unconventional and unfeminine figures. They are devoted to achieving their identity, freedom, self-existence, empowerment, right and suffragettes. The development moves in the direction of the giving of "one's self instead of freedom for one's self". (Vigdis, Y. "Women's Utopia in Ibsen's Writings". pp. 50-55)

To understand the Ibsen's treatment of women in *Hedda Gabler*, it is necessary to understand the story and the characters of the play first like: George Tesman, a scholar, Hedda Tesman, his wife; Miss Juliana Tesman, his aunt; Mrs. Thea Elvsted, a former school girl with Hedda, and at one time a friend of George; Judge Brack, a friend of the Tesman; Eilert Lovborg, a brilliant but alcoholic Scholar, formerly a friend of Hedda and George; and Berta, the Tesmans' servant. The setting is the drawing room of the Tesmans' villa in Christiania (now Oslo), Norway.

In this play, the protagonist of the play, Hedda Gabler represents herself as the exceptional woman, the woman who cannot absorb in the oneness, noble or ignoble, of a traditional marriage; but the coarse, low instincts do exist in Hedda. Hedda might even be called a misinterpretation of the superwoman to save the contentment of her instincts. She is an immoral thirstier after life, and her temperament is somewhat cold-blooded. She is not an ordinary woman, but a vampire preying upon other's weaknesses. Hedda's nature shallow thought it is, nurtures so many contradictions that it is quite difficult to form an objective view of her personality.

There is a vulgar jealously in Hedda which makes her, as a child, unable to bear the sight of another girl's beautiful hair, since hers is quite thin. She also has the low curiosity and shamelessness which are responsible for the pleasure she expresses in listening to the stories of other's dissipate life. "Her sigh for 'high life,' as represented by a liveried servant, betrays her low ideal of social refinement". (Brandes, George. *Henrik Ibsen: A Critical Study*. p. 106)

"Hedda Gabler is an extremely neurotic woman, who is cold-hearted, perverse, self-centred, and utterly incapable of showing affection. She is strong in her intellectual dishonesty, unwilling to face her life, her limitations, or her creditors. Hedda has no self-awareness, responsibility, or any inner life at all; love is a word she does not understand and cannot use. There is neither progression nor disharmony in her character. From the beginning of the play she is shown as eaten up envy and pride, in all the malignancy of impotence." (Bradbrook, Muriel. *Ibsen the Norwegian*. p. 116)

When we analyze the character of Hedda Gabler, we come to know that her physical appearance, actions, speech, and relations with other characters in the play are key factors that help to express her personality.

Hedda may also be called heartless, because she intentionally says things which will hurt others' feelings. Hedda ignores even her husband's smallest wishes. She thinks only of herself, is unwilling to please, and seems to be quite ill tempered. However, when Thea Elvsted appears on the scene, Hedda quickly calls her "du" only because she thinks that she will be able to use her, Hedda reveals the schemer in herself, and it is obvious that she is only playing up to Thea because she certainly has not set up a close relationship with her. Instead of addressing Thea by her real name, Hedda refers to her as Thora. She scarcely knew Thea at school and cannot even remember her name.

Hedda Gabler enjoys nothing, not even the praise she gets from her husband. When George comments on her beauty, she asks him to leave her alone. She is a very scheming woman and is able to remain calm, even when Mrs. Elvsted

International Journal of Advanced Research and Development

Online and Print Journal, Indexed Journal, Refereed Journal, Peer Reviewed Journal

ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24

Publication Certificate

This certificate confirms that **"Swarna"** has published article titled **"A naturalistic study of Henrik Ibsen's *A Doll's house*"**.

Details of Published Article as follow:

Volume	:	**5**
Issue	:	**4**
Year	:	**2020**
Page Number	:	**12-14**
Certificate No.	:	**5-4-11**
Date	:	**4-07-2020**

Yours Sincerely,

International Journal of Advanced Research and Development
www.advancedjournal.com
Email: ijard.research@gmail.com
Ph.: 9999888931

OURNAL IJELLH e-ISSN: 2582-3574 p-ISSN: 2582-4406 VOL. 8, ISSUE 7, JULY 2020

DOI: https://doi.org/10.24113/ijellh.v8i7.10655

Self- Liberation Vs Self- Renunciation in *Hedda Gabler*

Ms. Swarna

Research Scholar

C.C.S.University Campus

Meerut, India

swarnasingh206@gmail.com

Abstract

Henrik Ibsen, by using Hedda as the heroine or anti-heroine of the play *Hedda Gabler*, was clearly attacking a culture which stifled women's potential and fostered the feelings of entrapment and desperation that Hedda experiences. For all her flaws, the character of Hedda Gabler serves as a potent reminder of the individual's complex relationship to society and how we today reconcile our own needs with the roles and responsibilities expected of us. In following Hedda's psychological descent throughout the play, Ibsen was plainly criticizing the lack of acceptable life choices and opportunities for women in nineteenth-century society. The purpose of my research paper is to justify Hedda's act of suicide as an act of self-liberation vs self-renunciation. Her downfall is ultimately her own doing-she makes the mistake of marrying George for the wrong reasons but she is also a heavily flawed character who unsuccessfully manipulates people in an attempt to negotiate her own weakness. She chooses death not because of any insight she has gained from her mistakes but because she cannot face the consequences of her action. Thus, Hedda's death is tragic because it is an act of self-renunciation: she is free spirit who cannot be tamed by conventional society.

Advanced Research and Development

Journal of Advanced Research and Development
-4030; Impact Factor: RJIF 5.24
: 05-06-2020; Accepted: 21-06-2020; Published: 04-07-2020
dvancedjournal.com
me 5; Issue 4; 2020; Page No. 12-14

A naturalistic study of Henrik Ibsen's *A Doll's house*

Swarna[1], Ravindra Kumar[2]

[1] Research Scholar, Department of English, C.C.S. University, Meerut, Uttar Pradesh, India

[2] Associate Professor, Department of English, C.C.S. University, Meerut, Uttar Pradesh, India

Abstract

The purpose of the present study to deal with Naturalism in the plays of the famous Norwegian playwright, Henrik Ibsen who is known for his naturalistic spirit and for exploring social problems during the second half of 19th century with a view to reform the society. His plays are considered to be landmark in Ibsen's career as a naturalistic playwright. Drama and theatre of that time, likewise was focused on stock situations and predictable responses. But Ibsen offered a different prospective entirely. Naturalistic issues and women questions were the most important points in his plays. *A Doll House* (1879) by him is the best example of his naturalistic problem play based on the social reality of that time. The reality of the play urges the audiences and readers to think deeply about their own situations at home and to be aware of the problems that exist so that we are able to identify and solve the problems early.

Keywords: naturalism, social problems, stock situation predictable responses, women's questions, naturalistic issues

Introduction

Henrik Ibsen is one of the pioneers in the writing of naturalistic or realistic plays in revolt against the romantic drama and the well-made plays. In his hands the theatre began to move towards a naturalistic mode of performance and away from romanticism because it dealt with social problems and realities of life. He gave an entirely new dimension to drama in the later half of the nineteenth century. He strongly contributed to giving European drama, a vitality and artistic quality comparable to ancient Greek tragedies. Ibsen turned the theatre form a place of entertainment and occasional catharsis into a place from which the audience emerged with a compulsive feeling to reconsider basic principles which they had never before seriously questioned. His contributions to the theatre were manifold. Infact, he is the first one to show that tragedies could also be written about ordinary people and in everyday prose or language. His second contribution was that he has thrown away the artificialities of the plot (Shakespearean dramas). And his third contribution is that he developed the art of prose dialogue to a degree of refinement which remains still unsurpassed; that is what explaining the enduring greatness of Ibsen as a naturalist or realist.

English writers of realistic or naturalistic spirit attempted to understand the numerous aspects of individual as well as individual relationship to the society, then they depicted individual's adjusting or not adjusting to the developments and changes that rapidly shaped society because they believed that the laws behind the forces that govern human lives might be studied and understood through the study of human beings, they studied human beings governed by their instincts and passions as well as the ways in which the characters' lives were governed by the forces of heredity and environment. This naturalistic extension makes the logical extension of realism.

Naturalism was a literary movement or tendency from 1880s to 1930s that used detailed realism to suggest that social conditions, heredity and environment are inescapable forces in shaping human character. It tries to offer a photographic reproduction of reality in order to emphasis the materialistic aspects of human existence. These terms naturalism and realism are often used as synonyms. Even though the terms go hand in hand but they are not fully interchangeable. Emile Zola, who is considered to be the father of Naturalism inaugurates the term in his Preface to the Novel that the writer's task is to dissect the environment and human nature with a clinical precision of scientist.

This movement is informed by the 19th century science particularly by Darwin's biological theories *On the Origin of Species* (1859). It asserts that human beings exist entirely in order to nature. They don't have soul or any mode of participating in a religious or spiritual world beyond the biological realism of nature. The individual's compulsive instincts towards sexuality, hunger and accumulation of goods are inherited via-genetic compulsion and the social-economic forces surrounding his or her upbringing.

This psychology of the character is the basis of Naturalistic drama which gives the impression of continuation of actual reality and intends to mask the process of artistic creation and mediation. Psychology discovered a depth of meaning and human understanding in Ibsen's delineation of characters. Ibsen's superiority lies in his understanding of the labyrinthine human mind and his ability to portray its depth and nuance. Once Ibsen said in a conversation with M.G. Conrad:

"Before I wrote one word, I must know the character through and through, I must penetrate into the east wrinkle of his soul. I always proceed from the individual, the stage setting, the dramatic ensemble all of that comes naturally and causes me no worry, as soon as I am certain of the individual in every aspect of his humanity. But I have to have his exterior in mind also, down to the east button, how he stands and walks, how he bears himself, what his voice sound like. Then I don't let him go until his fate is fulfilled. (Meyer, Michael. *Ibsen.* pp. 580-581)

Various naturalistic elements can be observed throughout

Mrs. Meenu Sharma

415	LINEMEN SAFETY SYSTEM LAKSHMI C R,	3404-3409
416	SITA: AN EPITOME OF STRENGTH: A COMPARATIVE STUDY OF SITA: WARRIOR OF MITHILA AND RAMAYANA 3392AD MEENU SHARMA,	3410-3420
417	AI ENABLED WEED DETECTION AND FARMER AIDING SYSTEM Guturi nitish kumar, Bodanapu Venkata hanumantha reddy, Kocherla Venkata rajulu, Dara sai Lakshmi harshitha, Krishan,	3421-3426
418	A STUDY OF CONSUMER BEHAVIOUR TOWARDS SMALL CARS WITH REFERENCE TO RAJKOT CITY Ms. Hiral B. Vank,	3427-3436
419	AN EXAMINATION OF FACTORS INFLUENCING THE VOLATILITY OF INITIAL PUBLIC OFFERINGS – EVIDENCE FROM INDIAN MARKET Lakshya Suhasaria,	3437-3456

IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

SITA: AN EPITOME OF STRENGTH: A COMPARATIVE STUDY OF SITA: WARRIOR OF MITHILA AND RAMAYANA 3392AD

Meenu Sharma

ASSISTANT PROFESSOR, ISMAIL NATIONAL MAHILA PG COLLEGE,

CH. CHARAN SINGH UNIVERSITY, MEERUT U.P. INDIA.

Abstract

Myth has been projected with fresh life in contemporary narratives. This freshness is also evident in the delineation of most revered and idolized women characters like Sita, Draupadi, Sati, Gandhari, etc. Sita, firstly introduced by Maharishi Valmiki in his archaic saga Ramayana and has been refabricated distinctly over the ages. As modern literature gives a new stride to mythology, the character of Sita has been recapitulated with new dimensions. The present study would comparatively examine the character of Sita specifically in terms of her strength in two contemporary rehashings named *Sita: Warrior of Mithila* by Amish Tripathi and *Ramayana 3392 Ad*, a graphic novel by Virgin comics. Both these tales are set in assorted periods and demonstrate Sita in a completely new arena. In modern narratives, Sita has developed a persona based on her solidarity and frailties.

Key words

Myth, Narrative, Comparison, Sita, Strength, Ramayana, Women, Modern

Introduction

The Literature consistently tends to reconfigure its composition. Modern Indian English writing reconnoiters their underlying foundation to foster their artistic designs. Mythology gave wing to the insightful intellect of young authors and assumed an indispensable role in conferring Indian Mythology to the global arena as well. Narratives and trends from Vedic scrolls, Puranas, Upanishads, classics like Ramayana and Mahabharata, strengthen Indian Art history. Even though, Indian Mythology is an ocean that is yet to be

Certificate of Publication

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS | ISSN: 2320 - 2882

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

The Board of

International Journal of Creative Research Thoughts

Is hereby awarding this certificate to

MEENU SHARMA

In recognition of the publication of the paper entitled

SITA: AN EPITOME OF STRENGTH: A COMPARATIVE STUDY OF SITA: WARRIOR OF MITHILA AND RAMAYANA 3392AD

Published In IJCRT (www.ijcrt.org) & 7.97 Impact Factor by Google Scholar

Volume 9 Issue 4 , Date of Publication:April 2021 2021-04-19 05:17:49

UGC Approved Journal No: 49023 (18)

PAPER ID : IJCRT2104424

Registration ID : 205969

ISSN 2320-2882 IJCRT

EDITOR IN CHIEF

IJCRT | ISSN: 2320-2882 | IJCRT.ORG

Scholarly open access journals, Peer-reviewed, and Refereed Journals, Impact factor 7.97 (Calculate by google scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research Tool) , Multidisciplinary, Monthly Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS | IJCRT

An International Scholarly, Open Access, Multi-disciplinary, Indexed Journal

Website: www.ijcrt.org | Email id: editor@ijcrt.org | ESTD: 2013

 ISSN:2395-2636(P):2321 – 3108(E)

RESEARCH JOURNAL OF ENGLISH LANGUAGE AND LITERATURE (RJELAL)

A Peer Reviewed International Research Journal

Submission Open For

e KY publications Journals to your library-Printed cop

Current Issue

ENHANCED BY Google

Impact Factor:6.8992

Volume 9, Issue 2: 2021 April-June Issue

Crossref

Author	Article information	Page No/PDF
	THE RELATIONSHIP BETWEEN LANGUAGE, CULTURE AND IDENTITY AND THEIR IMPLICATIONS FOR LANGUAGE TEACHING	
	DETERMINING GENDER: THE PROBLEMATIC OF QUEER MASCULINITY IN DORIS LESSING'S THE GOLDEN NOTEBOOK SAMIHA TABASUM1, SAMBIT PANIGRAHI2 1Ph.D. Scholar, Department of English, Ravenshaw University, Cuttack, Odisha. 2Associate Professor of English, School of English, G. M. University,Sambalpur. doi:10.33329/rjelal.9.2.211	211-217 DOWNLOAD PDF
	BLINDNESS OR VISION: AN ANALYTIC STUDY OF HUMAN NATURE IN JOSE SARAMAGO'S 'BLINDNESS' MEENU SHARMA Assistant Professor, Department of English, Ismail National Mahila PG College, Meerut Uttar Pradesh, India. Email:menusharma009@gmail.com doi:10.33329/rjelal.9.2.218	218-223 DOWNLOAD PDF
	NIRAD C.CHAUDHURI AS A PRODUCT OF INDIAN RENAISSANCE-AN ANALYSIS Dr. Honnegowda C.S Asst. Prof, & Head, Dept. of English, JSS College of Arts, Commerce and Science, Nanjangud-571301, Karnataka, India Email: cshonnegowda@gmail.com. doi:10.33329/rjelal.9.2.224	224-226 DOWNLOAD PDF
	AN ECOCRITICAL STUDY OF R.K.NARAYAN'S NOVEL: "SWAMI AND FRIENDS" NOOJILLA SRINIVAS*1, Prof. T. ASHOK2 1Lecturer in English, Govt. Degree College, Alamuru & Research Scholar, JNTU	227-234

Research Journal of English Language and Literature (RJELAL)
A Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Impact Factor 6.8992 (ICI) http://www.rjelal.com;
Email:editorrjelal@gmail.com; ISSN:2395-2636 (P); 2321-3108(O)

Vol.9.Issue 2. 2021 (April-June)

RESEARCH ARTICLE

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA
2395-2636 (Print):2321-3108 (online)

BLINDNESS OR VISION: AN ANALYTIC STUDY OF HUMAN NATURE IN JOSE SARAMAGO'S 'BLINDNESS'

MEENU SHARMA
Assistant Professor, Department of English, Ismail National Mahila PG College, Meerut
Uttar Pradesh, India.
Email:menusharma009@gmail.com

Article Received: 10/05/2021
Article Accepted: 12/06/2021
Published online:19/06/2021
DOI: 10.33329/rjelal.9.2.218

Abstract
From the earliest times to the present, epidemics have afflicted human history in myriad ways. The aftermath found expressions in assorted modes of writings across varied nations and cultures and transcripts the precarious experiences. The magnificent literature of epidemics responds to natural disasters and counts on methods to heal and survive. Authored by the Nobel Laureate Jose Saramago, Blindness is regarded as one of the great instances of epidemic writing, and provides the research questions for this paper. The narrative is about a white blindness that interrupted the lives of people in an unfamiliar city like never before, escorting turmoil, misery, despair but also offering an unparalleled insight into life or the world. The outbreak of blindness uncloaked the disguised facets of human nature restrained by the facade of civilization. The study intends to investigate the erratic human behavior, moreover exhibits the best and worst examplar under extreme settings. To examine the frailty of human civilization, moreover features the moral choices that exist in a damaged world and are available to all beings are the prime motive of the article. The study divulges on the theory of survival, the prime nature of all human. Furthermore, Saramago has applied metaphoric blindness to confer an insight to look into things already present around but imperceptible with physical eyes.

Keywords: Epidemic, Civilization, Blindness, Society, Vision, Human behavior

The world has witnessed numerous plagues and epidemics since time immemorial. These unfortunate incidents overwhelmed every human being on this planet in some way or another. The affliction alters the globe geographically, culturally, politically, financially, and psychologically furthermore. Writers and poets have been depicting these shifts via fictitious and non-fictional accounts of epidemics that span across a multitude of eras and geographies. Albert Camus, José Saramago, Mario Bellatin, Stephen King, John M. Barry, Michael Willrich and Indian writers like Rabindranath Tagore, Premchand, Suryakant Tripathi 'Nirala are among the most efficacious chroniclers of epidemic occurences. Covid-19, the current global pandemic has piqued the public's interest in epidemic writings. In discernment of the current predicament, literature has been proved a potent apparatus. "Literature, in responding to epidemics celebrates the enduring range of human responses, the gamut of feelings that rage against the onslaught of disease and death," (Banerjee) Albert Camus's The Plague, Jose Saramago's Blindness Mario Bellatin's Beauty Salon, Stephen King's The Stand, John M. Barry's The Great Influenza, Margaret Atwood's The year of the Flood

Dr Mamta Singh

Vol. VIII No. II, April 2021
ISSN 2321-8479

JSER

Journal of Socio-Economic Review

(Peer Reviewed and Refereed National Research Journal)

Manyavar Kanshiram Shodhpeeth
Ch. Charan Singh University, Meerut
(U.P.) India

a Case Study in Shivamogga district

Dr. Dhananjaya

16 आत्मनिर्भर भारत में पशुपालन एवं डेयरी उद्योग की भूमिका 192-197

डॉ. अजय कुमार पांडेय सतेन्द कुमार

17. The Impact of Post Covid-19 Pandemic on The Tourism Industry 198-207
DR. B.A in India Venkateshalu, Sumithra R

18. Agrarian Crisis and Farmer's Suicide in India 208-223

Dr. K. Murugan

19. A Paradigm Shift in Economic Strategy & Banking Sector 224-239
ReformsAgro Processing Industries For Value
Addition & Marketing in India

Dr. Lakshmi Chatterjee

20. E-Governance in India: Problems, Challenges and Prospects 240-251

Dr. Mamta Singh, Sh. Omendra Singh

21. Impact of Global Recession on Indian 252-257

Dr. Md Mahmood Alam

22. जैव विविधता बनाम विकास 258-269

Dr. Prabha Gupta

23. Working Conditions of Unrganized Sector Labour in 270-276
Meerut Rezion

Dr. Mayank Mohan

24. Globalization Network and Indian Economy 277-280

Santosh Kumar Singh

25. भूमिहीन कृषिक परिवारों में आधारिक शिक्षा की स्थिति 281-289
(जनपद मेरठ, उत्तर प्रदेश के विशेष सन्दर्भ में) Aditya Singh

E-Governance in India: Problems, Challenges and Prospects

Mamta Singh[1], Omendra Singh[2]

Abstract

India is a developing country. Yet, it needs to fill the socio-economic objectives with effectiv governance of the Govt. In the era of ICT, all most all nations in the world adopted ICT in thei administration, providing essential goods and services to its masses on time. Electroni governance or e-governance is the application of information and communication technolog (ICT) for delivering government services, exchange of information, communication transactions integration of various stand-alone systems and services between government-to-customer (G2C government-to-business (G2B). ...E-Government can be an especially powerfu and important tool for cities in developing countries. ... By improving cities' capacity to provid services, achieve policy goals and increase efficiency and transparency, e Government encourages greater trust, participation and engagement of citizens. E-governanc aims to restore democracy to its true meaning by improving citizen participation in th Governing process, by improving the feedback, access to information and overall participation o the citizens in the decision making. ... It is to make people know the decisions, and policies o the Government.

Key Words - E-Governance, India, Communication, Information, Technology, Government

History of E-Governance in India

In 1977, the National Informatics Centre (NIC) was set up first major step towards e-governanc In 1980s, computers were used for word processing but this use was confined to only fe organization. Later with advancement of technologies, the government started use of ICT f some of the processes such as tracking movement of papers and files; monitoring of developme programmes, processing of employees' pay rolls etc. In 1998, a National Task Force Information Technology and Software Development recommended the launching of 'Operati Knowledge' to universalize computer literacy and spread the use of computers and IT education.

1Associate Professor, INPG College, Meerut
2Research Scholar, (Economics), School of Business Studies, Shobhit Institute of Engg. Technology(Deemed to-be University), Meerut.singhomendra2002@gmail.com

[Dr Kavita Garg]

ISSN-0975-2382

UPUEA ECONOMIC JOURNAL

A Biannual-Bilingual Refereed Journal of Economics

VOLUME - 16 CONFERENCE NO. - 16 APRIL 2021

16th ANNUAL CONFERENCE

THEME 1

Employment Opportunities, Informal Sector and Out Migration of Workers in Uttar Pradesh and Uttarakhand.

○ ○ ○

THEME 2

Informal and MSME Sector in India: Present Status and Prospects.

○ ○ ○

THEME 3

Integral Humanism as a Model for Holistic Development.

○ ○ ○

UTTAR PRADESH & UTTARAKHAND ECONOMIC ASSOCIATION

(Founded by Arthik Adhyayan Evam Shodh Vikas Samiti)

Organized By

Department of Economics, and Rural Department & Institute of Fine A
Dr. Rammanohar Lohia Awadh University, Ayodhya

THEME 3
Integral Humanism as a Model for Holistic Development

1. Analysis of Pandit Deendayal Upadhyay's Integral Humanism — 297
   Pooja Bhandari & V. B. Chaurasia

2. Economics of Health with Special Reference to Indian Economy — 304
   Angrej Singh

3. A Comparative Analysis of Gandhian and Deendayal's Economic Ideology in Post COVID-19 Context — 314
   Premananda Sethy

4. Environmental Friendliness: An Overview — 323
   Lakshmi Chatterjee

5. Ambedkar: A Fighter of Women's Right — 330
   Vijay Kumar Singh

6. एकात्म मानवतावाद--भारतीय वैदिक जीवनमूल्यों की आधुनिक–संगत पुनर्व्याख्या — 335
   श्रीराम अग्रवाल

7. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता — 345
   अर्चना श्रीवास्तव

8. एकात्म मानववाद चिंतन एवं आत्मनिर्भर भारत — 349
   अर्चना सिंह

9. वर्तमान आर्थिक समस्याओं के समाधान में पं0 दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता — 352
   पी. एस. त्रिपाठी एवं [illegible] अवस्थी

10. 21वीं सदी में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं उच्च शिक्षा : सम्भावनाएं एवं चुनौतियां — 357
   ममता सिंह एवं [illegible]

21वीं सदीं में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं उच्च शिक्षा : सम्भावनाएं एवं चुनौतिया

ममता सिंह* एवं कविता गर्ग**

सारांश

समाज के विकास और आर्थिक प्रणाली की वृद्धि के लिए एक सुनियोजित, निर्धारित, पारदर्शी शिक्षा प्रणाली व नीति की आवश्यकता है, क्योंकि शिक्षा ही सामाजिक व आर्थिक प्रगति की कुंजी है। प्राचीन काल से ही भारत का शिक्षा के क्षेत्र मे प्रभुत्व रहा है। शिक्षा स्थल ही वो केन्द्र बिंदु है जहाँ से राष्ट्र का निर्माण और विनाश दोनों ही सम्भव हो सकते है। भारत में स्वतंत्रता से पहले और स्वतंत्रता के बाद के काल में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक सुधार हुए है। हर देश अपनी शिक्षा व्यवस्था को अपने राष्ट्रीय मूल्यों के साथ जोड़ते हुए, अपने राष्ट्रीय ध्येय के अनुसार सुधार करते हुए चलता है। इसके पीछे मकसद होता है– देश की शिक्षा प्रणाली को अपनी वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों का भविष्य तैयार रखना और तैयार करना। भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का आधार भी यही सोच है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 21वीं सदीं के भारत की और नए भारत की नींव तैयार करने वाली हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21वीं सदीं की पहली शिक्षा नीति है जिसे पिछली शिक्षा नीति 1986 के 34 साल बाद घोषित किया गया है। पहले की शिक्षा नीति 1986 मूल रूप से परिणाम देने पर ही केन्द्रित थी, मतलब कि विद्यार्थियों का आकलन उनके द्वारा अर्जित अंकों के आधार पर किया जाता था जो कि एक एकल दिशा दृष्टिकोण है। नई शिक्षा नीति 2020 ठीक इसके विपरीत है, यानि यह बहुल दिशा दृष्टिकोण पर केन्द्रित है, जिसके द्वारा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होगा और यही इस नीति का उद्देश्य हैं। प्रस्तुत शोध–पत्र में मुख्य रूप से उच्च शिक्षा और उसके कार्यान्वयन को केन्द्रीभूत किया गया है। प्रस्तुत शोध–पत्र द्वितीयक समंकों पर आधारित्त है।

मुख्य शब्द : शिक्षा प्रणाली, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, उच्च शिक्षा, कार्यान्वयन

"लौकिक दृष्टि से हमें ऐसी शिक्षा चाहिए, जिससे चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और व्यक्ति स्वावलम्बी बनें। परलौकिक दृष्टि से शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति हैं।"

"स्वामी विवेकानन्द"

प्रस्तावना

प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा पर अनेक परिर्वतन समय समय पर किए जाते रहे है लेकिन फिर भी यह लगता रहा है कि हर बार कुछ न कुछ छूट रहा है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इन अभावों को पूरा

* असिस्टेंट प्रोफेसर आई० एन० पी०जी० कॉलिज मेरठ (उत्तर प्रदेश)
** असिस्टेंट प्रोफेसर, आई० एन० पी०जी० कॉलिज मेरठ (उत्तर प्रदेश)

Dr. Kavita Garg

ISSN 2321-8479
Vol. VIII No. II, April 2021

Journal of Socio-Economic Review

(Peer Reviewed and Refereed National Research Journal)

Special Issue for Indian Economic Association
on

REVIEWING THE ECONOMY TOWARDS SELF-RELIANT INDIA & ROLE OF TECHNOLOGY, INNOVATION AND START-UPS FOR ECONOMIC GROWTH IN INDIA

Editor-In-Chief, JSER & Secretary, IEA
DINESH KUMAR

Managing Editor, IEA
K.N. BHATT

Indian Economic Association

MANYAVAR KANSHIRAM SHODHPEETH
Ch. Charan Singh University, Meerut (U.P.) India

20:1

CONTENTS

Vol. VIII No. II, April 2021
(Peer Reviewed National Journal)

S. No	Research Paper/Author	Page No.
1.	An evaluation of Microfinance in India: A study with special reference to Joint Liability Group (JLG) **Dinesh Kumar, Dr. Kavita Garg, Chaman Prakash Sharma**	01-15
2.	Linkages between Agriculture and Rural Development in India **Dr. Angrej Singh Rana, Dr. Praveen Kadyan**	16-27
3.	Global environmental Issues in the path of Sustainable Human development: Some insights **Dr Anamika Choudhary**	28-35
4.	Revisiting the Dimensions of The Governance and Infrastructure in India with Reference to SDGs" **Arijit Ghosh, Samrat Roy, Deepak Prakash Agaarwal**	36-52
5.	AStudy on Migrant Labourers in Karnataka - With Special Reference to Mysore District **Dr. R.H. Pavithra**	53-63
6.	Short –Run Changes in Real GDP and Income Re-Distribution during Covid-19: A Case of India **Dolly Singh, Prof. Girish Mohan Dubey**	64-76
7.	Prospective Impact of Covid 19 on Rural Economy of Bharat **Prof. (Dr.) Vikram Dev Acharya** **Vineeta Singh (Res/Scholar)**	77-83
8.	Technology for Pandemic Management and Mitigation **Rakesh Kumar Gulati, Dr. Manveen Kaur**	84-92
9.	Rising Bank NPAs and role of IBC **Manohar Manoj Kumar**	93-104
10.	Challenges and Opportunities of Digital Transaction in Rural Economy **Dr. Premananda Sethy**	105-123
11.	COVID 19 and MSME Conundrum in India- Revival Frame work **Dr. P.Manjushree, Dr. M.Sudha, Dr. M.Jyothsna**	124-135
12.	Self-Reliant Indegenous Livestock Farming in India (With special reference to Bihar) **Archana Kumari**	136-151
13.	Assessing the Impact of Global Business Cycle in India **Dr. Deepa Soni**	152-164
14.	A Comparative Assessment on the Intersectoral Linkages in India **Ms. Geet, Dr. Ombir Singh**	165-179
15.	Empowerment of T Lambani Women (Tribal)	180-191

An evaluation of Microfinance in India: A study with special reference to Joint Liability Group (JLG)

Dinesh Kumar[1] Kavita Garg[2] Chaman Prakash Sharma[3]

ABSTRACT

The National Bank for Agriculture and Rural Development (NABARD) has launched a Joint Liability Group scheme in 2004-05, to help the people like tenant farmers, sharecropper, oral lessees, etc, through formal banking system.The members should be homogeneous; both in terms of activities and in terms of the risk associated with such activities. The main aim of Joint Liability Group has been to facilitate mutual loan guarantee and implementation of joint liability agreement, making the members personally and jointly liable for payment of interest and loan obtained from the bank. The members should be integrated in their behaviour with honesty to repay the loans. India is home to almost one third of the world's poor, though many poverty alleviation programs are currently active in India, by central government and state government. Microfinance plays a major role in alleviating poverty and financial inclusion. In the past few decades, it has helped remarkably in eradicating poverty. Microfinance is not just about giving micro credit to the poor rather it is an economic development tool that's objective is to assist poor to come out of poverty. The main form of group-based credit is Self Help Group Bank Linkage Programme (SHG-BLP) and Joint Liability Group (JLG).This paper discusses about the Joint Liability Groups, and difference between SHG-BLP and JLG model. The JLGs have been presented in number and in percentage in this research paper region-wise and state-wise from 2010-11 to 2018-19. Loan sanctioned by banking sector to JLGs, region wise and state wise have been shown in percentage from 2010-11 to 2018-19.

Key words: Joint Liability Groups, Poor, Microfinance, Percentage, Self Help Groups.

Introduction:

India is an agrarian economy and even today more than sixty percent of the country's population depends on agriculture directly and indirectly. Agricultural related class resides in rural India. Out of the total farming, community more than eighty percent farmers are small and marginal farmers and they are economically poor. Due to this, they are below the poverty line

1 Professor, Department of Economics, Ch. Charan Singh University, Meerut
2 Assistant Professor, INPG College, Meerut
3 Research Scholar, Dept. of Economics Ch.Charan.Singh. University, Meerut

ISSN 2321-8479
Vol. IX No. I, October 2021

Journal of Socio-Economic Review

(Peer Reviewed and Refereed National Research Journal)

Special Issue for Indian Economic Association
on
REVIEWING THE ECONOMY TOWARDS SELF-RELIANT INDIA &
ROLE OF TECHNOLOGY, INNOVATION AND
START-UPS FOR ECONOMIC GROWTH IN INDIA

Editor-In-Chief, JSER & Secretary, IEA
DINESH KUMAR
Managing Editor, IEA
K.N. BHATT

Indian Economic Association

MANYAVAR KANSHIRAM SHODHPEETH
Ch. Charan Singh University, Meerut (U.P.) Indi

CONTENTS

Vol. IX No. I, October 2021
(Peer Reviewed National Journal)

S. No.	Research Paper/Author	Page No.
1.	Health Concerns of the Invisible Workers Engaged in Unorganized Sector Chhaya Teotia	01-07
2.	Problems and Prospects of Tourism in Rajasthan Mahmood Alam	08-14
3.	MSMEs as Economic Growth Driver- A Paradigm Shift In Economic Strategy & Banking Sector Reforms Madhuri Rozal	15-27
4.	MSME Sector and Covid – 19: Strength, Challenges and Opportunities Shristi Purwar, Jagdish Narayan	28-34
5.	Trends of Female Participation in Indian Economy: A Critical Evaluation Dinesh kumar, Ruby	25-46
6.	Salient Features of Manchanabele Medium Irrigation Project Ramachandra Nagi Reddy	47-52
7.	कोविड19 एवं भारतीय अर्थव्यवस्था में एमएसएमई की भूमिका Mamta Singh, Kavita Garg	53-62
8.	Performance of MSMEs in India and its issues Suchitra.S, Marutesh	63-71
9.	India's Look East Policy: A Case of India Myanmar Bilateral trade Manesh Choubey	72-79
10.	E-Banking Services and Bankers' Perspective- An Empirical Study in Punjab R.K. Uppal	80-96
11.	Challenges of Higher Education in India P. Thiagarajan	97-114
12.	Socio-Economic Impact of Covid-19 Pandemic On Pravasi Workers N. Maruti Rao	115-125
13.	ग्रामीण विकास के संदर्भ में आत्मनिर्भर भारत अभियान की प्रासंगिकता अनिल ठाकुर	126-129
14.	Effect of COVID-19 on Uttar Pradesh Tourism Akanksha Singh, Pooja Sahu	130-140

कोविड19 एवं भारतीय अर्थव्यवस्था में एमएसएमई की भूमिका

Mamta Singh[1], Kavita Garg[2]

Abstract

किसी देश की तरक्की की गाथा तभी लिखी जा सकती है जब वहां की अर्थव्यवस्था तेजी से आगे बढ़े। भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियाद भले ही कृशि क्षेत्र हो, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम क्षेत्र पिछले पांच दशकों में भारतीय अर्थव्यवस्था का एक बेहद जीवंत और गति ील क्षेत्र के रूप में उभरा है। इस भोध पत्र का मुख्य उददे य एमएसएमई का भारतीय अर्थव्यवस्था में योगदान का अध्ययन करना है। भारतीय अर्थव्यवस्था मे एमएसएमई बड़े उद्योगो की तुलना मे अपेक्षाकृत कम पूंजी लागत में बड़े रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में, क्षेत्रीय असंतुलन को कम करने में, ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के औद्योगीकरण में मदद करने में, निर्यात करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है।एमएसएमई के योगदान को देखते हुए अन्य क्षेत्र भी इससे लाभान्वित हो रहे है, जिसमें बड़ी कम्पनियां भी भाामिल है। यह देश की आबादी के लिए लगभग 12 करोड़ रोजगार पैदा करते है। कोविड–19 काल में एमएसएमई सेक्टर में काफी समस्याएं उत्पन्न हो गई है। इन समस्याओं का समाधान करना आव यक है।प्रस्तुत भोध द्वितीयक समंकों पर आधारित होगा जो मुख्य रूप से ई–पुस्तकों, वेबसाइट, अखबार आदि से संकलित किए जाएगें।

मुख्य बिन्दु –सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई),भारतीय अर्थव्यवस्था, रोजगार, औद्योगीकरण, कोविड–19

प्रस्तावना

चीन के वुहान से भाुरू हुआ कोरोना वाइरस वर्तमान समय में दुनियाभर के अधिकांश देशों में फैल गया है। यह एक भयंकर महामारी के रूप में हमारे सामने आकर खड़ा हो गया है। अमेरिका, फ्रांस, दक्षिण कोरिया, ईरान और इटली जैसे कई दे ा इस बेहद खतरनाक वाइरस की चपेट में आ चुके है। अब भारत देश भी इससे अछूता नही रहा। कोरोना वाइरस ने सम्पूर्ण वि व के व्यापार जगत, खेल जगत, उद्योग जगत, शिक्षा जगत इत्यादि को संकट में लाकर खड़ा कर दिया है। **रिसर्च एवं रेटिंग मूडीज (Moody's) एनालिटिक्स** की रिपोर्ट के मुताबिक वैश्विक अर्थव्यवस्था की विकास दर में कोरोना की वजह से इस साल 0.4 फीसद की गिरावट हो सकती है। पहले वर्श 2020 के लिए वैश्विक विकास दर में 2.8 फीसद की बढ़ोत्तरी का अनुमान लगाया गया था जिसे घटाकर अब 2.4 फीसद कर दिया गया है। कोरोना काल की

1Assistant Professor, IN PG College, Meerut,**Email id** -dr.mamtasingh1@gmail.com
2Assistant Professor, IN PG College, Meerut, **Email id** -drkavitagarg1@gmail.com

UPUEA ECONOMIC JOURNAL

UPUEA ECONOMIC JOURNAL

A Biannual Bilingual Refereed Journal of Economics

Conference No. 16

April 2021

16th ANNUAL CONFERENCE

09th and 10th April 2021

Uttar Pradesh - Uttarakhand Economic Association

Organized By

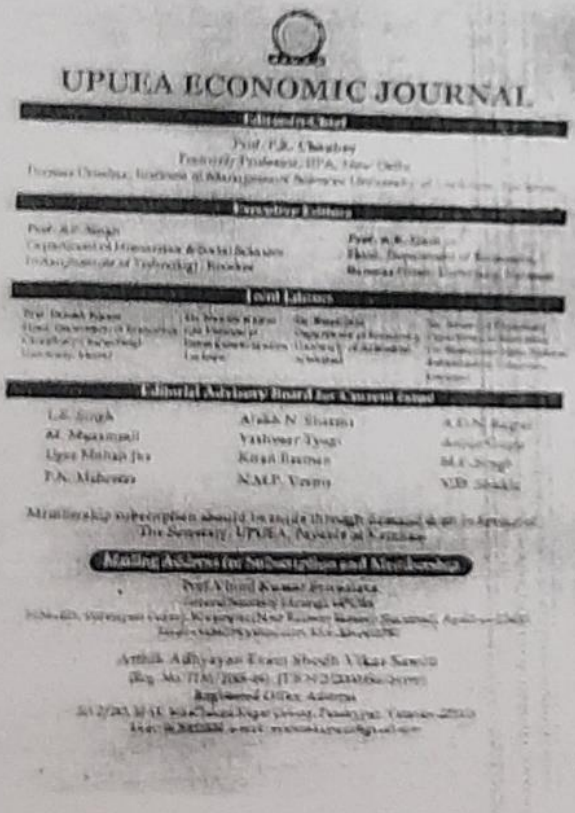

Department of Economics and Rural Development & Institute of Fine Arts

UPUEA ECONOMIC JOURNAL

Editorial Advisory Board for Current Issue

L.B. Singh	Alakh N. Sharma	A.D.N. Bajpai
M. Muzammil	Yashveer Tyagi	
	Kiran Barman	M.K. Singh
P.K. Mahesha	N.M.P. Verma	

Mailing Address for Subscription and Membership

KUNAL BOOKS

P.R. PUBLICATIONS

ISSN-0975-2382

UPUEA ECONOMIC JOURNAL

A Biannual-Bilingual Refereed Journal of Economics

VOLUME - 16 CONFERENCE NO. - 16 APRIL 2021

16th ANNUAL CONFERENCE

THEME 1

Employment Opportunities, Informal Sector and Out Migration of Workers in Uttar Pradesh and Uttarakhand.

O O O

THEME 2

Informal and MSME Sector in India: Present Status and Prospects.

O O O

THEME 3

Integral Humanism as a Model for Holistic Development.

O O O

UTTAR PRADESH & UTTARAKHAND ECONOMIC ASSOCIATION

(Founded by Arthik Adhyayan Evam Shodh Vikas Samiti)

Organized By

Department of Economics, and Rural Department & Institute of Fine A
Dr. Rammanohar Lohia Awadh University, Ayodhya

2

वर्तमान समय में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता

डॉ. ममता सिंह* एवं डॉ. कविता वर्मा**

प्रस्तावना

देश के युवा वर्ग में बढ़ता असंतोष राष्ट्र के लिए चिन्ता का विषय है। इस असंतोष के अनेक कारण हैं। कुछ हमारे देश की वर्तमान परिस्थितियां इसके लिए जिम्मेदार हैं तो कुछ उत्तरदायित्व हमारी त्रुटियां राष्ट्रीय नीतियों एवं दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति का भी है। अनियंत्रित रूप से बढ़ती जनसंख्या से फलस्वरूप उत्पन्न परिस्थितियों से युवा वर्ग में असंतोष की भावना उत्पन्न होती है। जब युवाओं के श्रम का कोई राष्ट्र समुचित उपयोग नहीं कर पाता है तब युवा असंतोष पनपने लगता है। इसे समाप्त करने के लिए आवश्यक है कि हमारे राजनीतिज्ञ व प्रमुख पदाधिकारीगण निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर देश के विकास की ओर ध्यान केंद्रित करें एवं सुदृढ़ नीतियां लागू करें, क्योंकि किसी भी राष्ट्र अथवा देश के नवयुवक उस राष्ट्र के विकास एवं निर्माण की आधारशिला होते हैं। स्वस्थ नवयुवक ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं।

विलक्षण बुद्धि, सरल व्यक्तित्व एवं नेतृत्व के अनगिनत गुणों के स्वामी, पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म 25 सितम्बर 1916 में हुआ जबकि हत्या सिर्फ 52 वर्ष की आयु में 11 फरवरी 1968 को मुगलसराय के पास

* असिस्टेंट प्रोफेसर, [illegible] कॉलिज, मेरठ (250001)।
** असिस्टेंट प्रोफेसर, [illegible] कॉलिज, मेरठ (250001)।

Dr Sarika Sharma

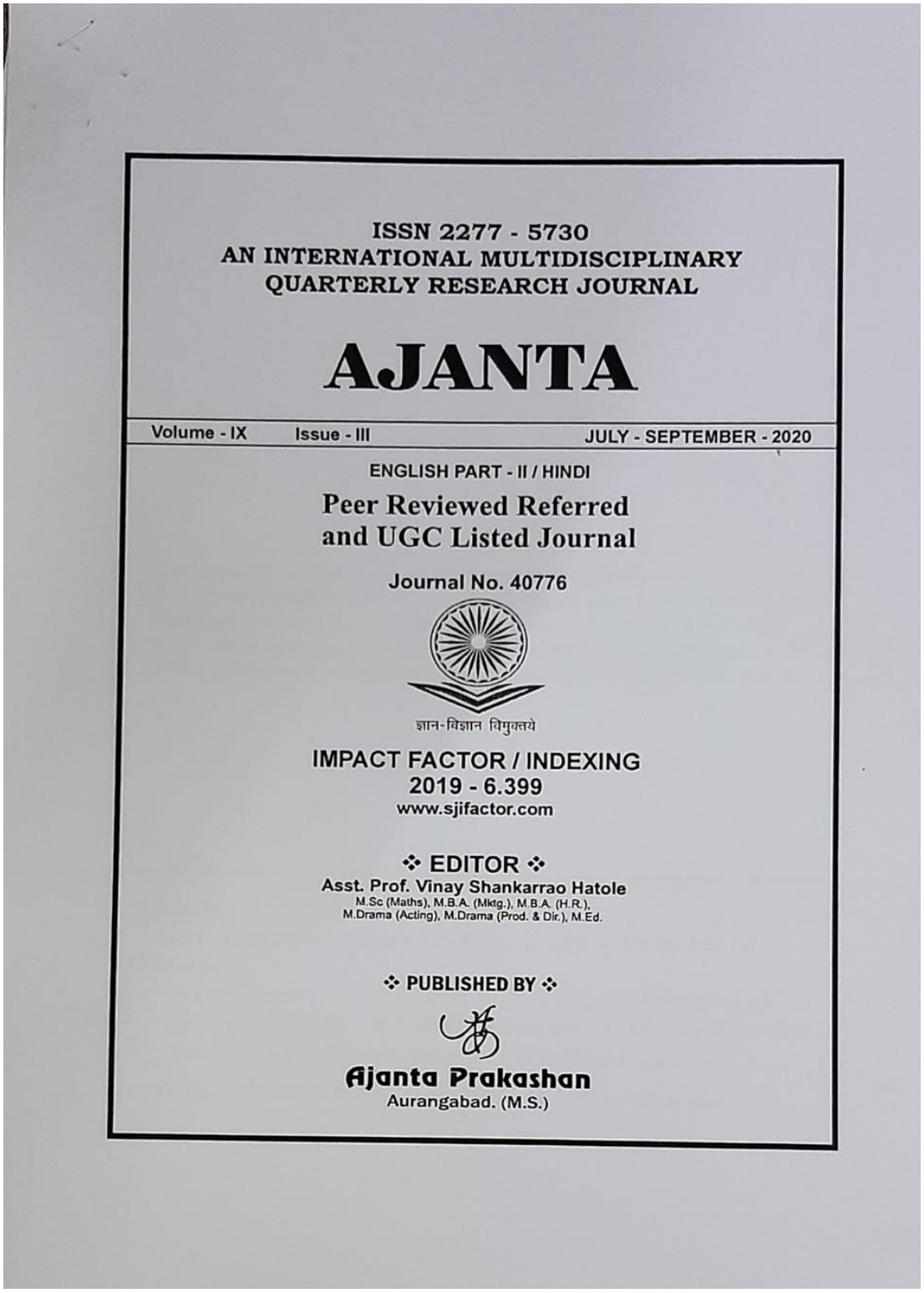

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX Issue - III JULY - SEPTEMBER - 2020

ENGLISH PART - II / HINDI

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖
Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

VOLUME - IX, ISSUE - III - JULY - SEPTEMBER - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	कोरोना महामारी स्त्रियों के रोजगार का संकट और स्वास्थ्य **स्मिता मुरलीधर भगत**	१-४
२	गोंदिया जिले की गृहणीयो द्वारा कोविड-१९ संक्रमण के दौरान स्वयं के तनाव का प्रबंध एक अध्ययन **डॉ. जी. वाय. ढोके** **डॉ. जी. ए. भालेराव**	५-११
३	कोरोनाकाल और मजदूर पलायन की त्रासदी **डॉ. उमा देवी**	१२-१६
४	कोविड-१९ का प्रवासी श्रमिकों पर प्रभाव **प्रो. विकास वर्मा**	१७-२२
५	कोविड-१९ के दौरान पलायन का मनोवैज्ञानिक प्रभाव **सारिका शर्मा**	२३-२६

VOLUME - IX, ISSUE - III – JULY – SEPTEMBER - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

५. कोविड-१९ के दौरान पलायन का मनोवैज्ञानिक प्रभाव

सारिका शर्मा
इ. ने. म. (पी.जी), कॉलेज, मेरठ (उ.प्र.)

सारांश

महामारी कोविड–19 एक ऐसी आपदा है जिसने भारत ही नहीं विश्व भर के जनमानस को विचलित करके रख दिया। बुजुर्गों का कहना है कि ऐसी SARS COVID-19 वायरस द्वारा फैली बीमारी का भयावह रूप उन्होंने 90–100 साल में पहली बार देखा है। स्थिति की विकरालता के कारण ही केन्द्रीय स्वास्थ्य संगठन ने Toll Free Helpline No. 08046110007 देश व्यापी लॉकडाउन के दौरान लोगों के मानसिक स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए प्रदान किया, ताकि लोग सलाह लेते रहें। इस लॉकडाउन के कारण प्रत्येक राज्य में असंख्य लोग प्रवासी स्थान से स्थायी निवास की ओर गए। इस दौरान वे न केवल आर्थिक विषमताओं से जूझे वरन् मानसिक समस्याओं का भी सामना किया। केन्द्रीय कौशल विकास मंत्रालय के आंकड़ों के अनुरूप बिहार और उत्तर प्रदेश के 44 लाख लोगों ने 53 जिलों में पलायन किया। इण्डियन एक्सप्रेस रिपोर्ट के मुताबिक छः राज्यों में बिहार के लोगों ने सर्वाधिक पलायन किया। बिहार के 32 जिलों में 23.6 लाख लोग वापिस घर आए और दूसरे स्थान पर उत्तर प्रदेश के 31 जिलों में 17.48 लाख लोग वापिस अपने घर आए। कोरोना संक्रमण के दौरान लॉकडाउन ने न केवल मजदूर वर्ग को वरन् शिक्षित एवं अमीर वर्ग को भी प्रभावित किया और पलायन भी विद्यार्थी, शिक्षक, अधिकारी और उद्योग पतियों द्वारा भी हुआ। रोजगार से न केवल निम्न वर्ग को हाथ धोना पड़ा वरन् उच्च वर्ग भी घेरे में आया। व्यवसाय में घाटे के कारण मेरठ के बड़े उद्योग पति डॉ० हरिओम अग्रवाल ने 29 जून, 2020 को आत्महत्या कर ली। ऐसे और भी अनेक उदाहरण हैं, जिन्होंने मानसिक तनाव एवं हताशा से जीवन त्याग दिया।

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में इसी तथ्य पर प्रकाश डाला गया है कि कोविड–19 ने लोगों के (विशेषतः भारत वर्ष के लोगों के) मन–मस्तिष्क पर किस प्रकार का प्रभाव डाला है। यदि इसका प्रभाव नकारात्मक रहा तो कहीं पर सकारात्मक भी रहा। यही इस शोध का निष्कर्ष निकला।

प्रस्तावना

कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण पूरा विश्व भयावह आपदा का सामना कर रहा है। इसे विश्व युद्ध से भी अधिक घातक एवं विकराल माना जा रहा है, जिसका अन्त होता भी नहीं दिख रहा। भारत में 1.38 अरब जनसंख्या एक भयानक दौर से गुजर रही है। भारत में 24 मार्च से 14 अप्रैल 2020 तक राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन किया गया, जिसे क्रमबद्ध तरीके से 5 बार बढ़ाया गया। भारत की विशाल जनसंख्या और सीमित संसाधनों में यह समस्या और भी शोचनीय हो गयी। "The lockdown applied to three main areas : physical movement out of the home, social distancing when outside the home and restricted availability of most public services while sparing essential services", Dr. Liji Thomas. लॉकडाउन के कारण आर्थिक

RNI NO. UPBIL/2018/72949
ISSN NO.2581-5881 (PRINT)

LAKSH
Estd. 1996

IPEM JOURNAL FOR INNOVATIONS IN TEACHER EDUCATION

VOLUME 5 JULY 2020

The Annual Refereed Journal of the Centre for Teacher Education
of the Institute of Professional Excellence and Management

Rs. 300 (ANNUAL SUBSCRIPTION)

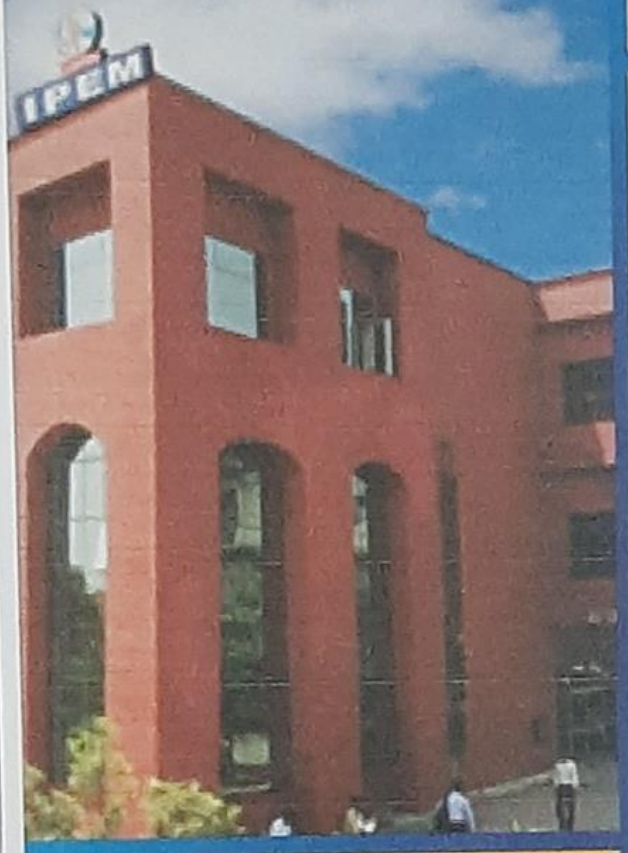

CONTENTS

Education And Employment – Perspective Of Women
Dr. Udayana & Dr Kanika

Value Education: Present Status And Trends
Dr. Anju Baghel

Online Education during COVID-19: Advantages and Challenges
Dr. Raj Lakshmi Raina

Intellectual Property Rights & It's Nature
Dr. Raju Ghanshyam Shrirame

Inclusive Participation in Secondary Education: A Phenomenological Investigation
Kalyani Biswal

Education & Employment: Critical Analysis of Issues & Challenges
Dr. Monika Jain

Impact of Coronavirus on Indian Economy
Mrs. Mukesh Chahal

Innovations in Teacher Education
Ms. Sruthi.S

Role of Education to Eradicate Unemployment
Ms. Garima Bansal & Ms. Neha Bansal

Impact of Education and Employment on Women Empowerment
Ashma Parveen

Moral and Global Education in Youth
Ms. Sarika Sharma

शिक्षा एवं रोजगार के विविध आयाम
हरीतिमा दीक्षित व रजनी शर्मा

विशिष्ट बी०टी०सी० कार्यक्रम के प्रति बी०एड० एवं एम०एड० प्रशिक्षणार्थियों की राय का एक अध्ययन।
श्री सुभाष चन्द्रा

Local Self Government An Effective Method of Women Empowerme
Dr. Rama Achyut Pande

Published by :
The Centre for Teacher Education, Institute of Professional Excellence and Management
(ISO 9001:2015 Certified & NAAC Accredited)
A-13/1, South Side G.T. Road Industrial Area
NH-24 By Pass, Ghaziabad, U.P. - 201 010
Ph.: 0120-4174500, Fax : 0120-4174500
E-mail : cte.journal@ipemgzb.ac.in
Website : www.ipemgzb.ac.in

IPEM JOURNAL FOR INNOVATIONS IN TEACHER EDUCATION

The Annual Refereed Journal of Centre for Teacher Education of the Institute of Professional Excellence and Management

• Volume 5 • July 2020

Contents

1. **Education And Employment – Perspective of Women** 02
Dr. Udayana & Dr Kanika

2. **Value Education: Present Status And Trends** 06
Dr. Anju Baghel

3. **Online Education during COVID-19: Advantages and Challenges** 11
Dr. Raj Lakshmi Raina

4. **Intellectual Property Rights & It's Nature** 15
Dr. Raju Ghanshyam Shrirame

5. **Inclusive Participation in Secondary Education: A Phenomenological Investigation** 19
Kalyani Biswal

6. **Education & Employment: Critical Analysis of Issues & Challenges** 25
Dr. Monika Jain

7. **Impact of Coronavirus on Indian Economy** 29
Mukesh Chahal

8. **Innovations in Teacher Education** 31
Sruthi.S

9. **Role of Education to Eradicate Unemployment** 36
Garima Bansal & Ms. Neha Bansal

10. **Impact of Education and Employment on Women Empowerment** 40
Ashma Parveen

11. **Moral and Global Education in Youth** 43
Sarika Sharma

12. शिक्षा एवं रोजगार के विविध आयाम 47
हरीतिमा दीक्षित व रजनी शर्मा

13. विशिष्ट बी0टी0सी0 कार्यक्रम के प्रति बी0एड0 एवं एम0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की राय का एक अध्ययन। 50
सुभाष चन्द्रा

14. **Local Self Government An Effective Method of Women Empowerment** 57
Dr. Rama Achyut Pande

Moral and Global Education in Youth

Sarika Sharma*

Introduction

Moral values are socially accepted standards for a man.When these values are according society, they are beneficial not only for human being but for society also. Global values are those values which makes a man suitable for his professional life. Moral values are relative values that must be check and test time to time to make sure that they are fulfilling their mission. Forexample, in one situation courage is respectful though in other situation it is foolish martyrdom, likewise commitment can a person who knows the difference between right and wrong and chooses right is moral. Person whose morality is reflected in his willingness to do the right thing - even if it is hard or dangerous is ethical. Actually, ethics are moralvalues in action. In present time Education include ultra-modern technology where we are focused and concentrated more toward knowledge for development of society, nation and ourselves in true sense and ignoring ethical aspect.Actually, the purpose of formal and informal education has been completely overlooked,we like that type of education which can help him to get a better job and position in employment market which will ultimately help him to accumulate lot of money. Though fact is that we cannot be happy without keeping others happy.Sometimes it is known as synonymous of social adjustment but there is a significant difference between social adjustment and value education. Adjustment can be positive as well as negative. Exceptit, human behavior which is changed according situation is adjustment but values are those thoughts which are rooted deeply in a human being.

Review of Literature

- The National policy of Education (NPE)1986 has emphasized to make the education powerful instrument for inculcating social and moral values in children, society and country.
- The National Curriculum Framework (2005) reflects- "Education for peace seeks to nurture ethical development, inculcating values, attitudes and skills required for living in harmony with oneself, with other including nature, value education, character building."

Objective of the study

The objective of the study is not to suggest a moral code of conduct.But I am trying to capture young people's perceptions of what they think about the role of moral values, is important for global upliftment or their career advancement. One culture's core value may be different to another's. Understanding of their perceptions and which moral value is influencing their behavior is also a key point of this study.

Methodology

The primary data wascollected through structured questionnaire which was comprises into hundred questions covering twelve types of moral values. All the questions have to respond in yes or no.One interview session was also held. The study has been undertaken by collecting data from youth of different fields and subjects. One interview session was also conducted. The data was analyzed by adopting simple statistical methods.

*Department of Education, INMPG College, Meerut

ISSN 2304- 5303

Printing® Area

Issue-71, Vol-02 November 2020

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

INDEX

01) Domestic Violence and Human Rights in India
H.S Harsha Kumar, Bangalore ||13

02) TUKARAM STUDY IN THE FIRST HALF OF THE 20TH CENTURY: A CRITICAL REVIEW
Sanjiv Kondekar & Savita Deogirkar ||19

03) Privatization Effects on Higher Education
Sarika Sharma, Meerut ||24

04) Labour Participation, Migrationand its Impact on Urbanization
Dr. Harendra Kumar Singh, Ballia, U.P. ||29

05) Strategic Partnership: A New Chapter in the History of Russia-India Relations
VIJAY PRATAP GAURAV, New Delhi ||33

06) ONLINE TOOLS AND SOFTWARE FOR REMOTE TEACHING - LEARNING
DR.SRINIVAS BANDI, BIDAR ||39

07) IMPACT OF CLIMATE CHANGE ON HUMAN HEALTH
Dr. Puskar Deo, Bodh-Gaya ||43

08) China – Africa Relations in The 21st Century
Rajeev Ranjan Sinha, Gwalior ||50

09) A Study of Impact of Global Warming
Sangam Kumar Sugam, Dist-Saharsa(Bihar) ||52

10) Sarcasm as an Effective Tool to Inspire in Statue Poems of Kusumagraj
Dr. K. A. Thosar, Chikhli ||56

11) झाडांचे औषधी उपाय
श्री. बाळासाहेब रघुनाथ चव्हाण, जिल्हा– पालघर ||60

12) गोपाळ समाज संस्कृती : एक दृष्टिक्षेप
प्रा. डॉ. राठोड बी. जे., जि. बीड ||63

13) महर्षी धोंडो केशव कर्वे यांचे सामाजिक कार्य
प्रा.डॉ.बिभीषण करे & राजेंद्र गव्हाणे, मुंबई ||67

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

03

Privatization Effects on Higher Education

Sarika Sharma
Department of Education,
INMPG College Meerut

Abstract

India has a huge population of uneducated children. Although the constitution provides for free and compulsory education upto the age of 14. The system of education at all level is not satisfactory. Our government has tried to improve it by many bills and directive principles time to time. Yet, there is a room for improvement. Government both at the centre and in the states need to allocate far more resources and attention on ensuring that future generations are equipped sufficiently to operate in a knowledge economy. Thus, India has to find a strategy that will enable it to effectively address the multiple changes and challenges in the higher education sector. We can observe many changes regarding objectives, curriculum, admission procedure, and teaching techniques etc. in higher education. This paper explain some changes in higher education as students migration to get higher education, entry of foreign universities, privatization of higher education in India, contractual appointment in higher education, economic help for students to get higher education, emphasis on innovative, skilled and high-tech education, grading system in higher education, dress code for convocation ceremony, proliferation of colleges and deemed universities, boom of knowledge economy, single window to regulate higher education, emphasis on private investment to improve educational infrastructure. The new environment holds both threats and opportunities to higher education in the country. Cut throat competition for employment, high fee structure, challenge for local institutions are some examples of difficulties which are in practice. On the other hand, there are some positive features also student will could get a qualitative education easily. They would get a wide range of employment and opportunities.

1.0 Introduction - A nation's progress depend upon the progress of people and its people's progress depends upon the quality of education and bringing quality in education is the responsibility of our nation's Higher Education Institution. The reason with the fastest growing economies in the world is making plan to protect its economic interests by assuring world class education through its institutions of higher learning. That is why, there is a vast change in our higher education sector.

2.0 Present higher Education Status in India

It's enough to describe the higher education system, that only 12.5% student of primary school get their higher education. Out of this per cent, only few students complete their higher education in India. At world level, only 23% students get higher education. Many developing countries are a far ahead than India.

India have 400 universities including 128 Deemed Universities. But this number is very small against our demand. According to the report of intelligence commission India needs 1500 universities and 50000 colleges more.

3.0 Plan allocation for higher education-

Allocation of funds for higher education in different five year plans according CBGA (2011b), Planning Commission (2008) and Planning Commission (2002)

First five year plan- 7.8
Second five year plan- 17.6
Third five year plan- 14.8
Fourth five year plan- 25.2
Fifth five year plan- 27.9
Sixth five year plan- 21.4

www.irjhis.com

ISSN : 2582-8568
Impact Factor : 5.71

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES

(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)

Volume 2, Issue 4, April 2021

SHREYAS PUBLICATION, AURANGABAD

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
ISSN 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.71 (SJIF 2021)

Robustness of T Scores when the true score is considered As a Random Variables

Suraksha Pal and Sarika Sharma
Department of Education,
C.C.S*University, Meerut – 250 005 (India)

DOI Link :: http://doi-ds.org/doilink/04.2021-56451536/IRJHIS2104008

Abstract:

Various testing situations have been analysed in the Bayesian setup in which updating the prior variations with experimental data has been the main concern. Here, it is recognized that prior variations do have an impact on the basic distribution of raw scores. Following the concept, the present study deals with the development of statistical methods useful for updating the basic distribution in view of the prior variations in true scores. Further, this updated basic distribution is used to analyze the sensitivity aspect of T-scores when the true score is considered as a random variable.

1.0 Introduction:

Suppose a standardized test in some subject be administered to a person. Let X be the random variable denoting the raw score of the person in the test. Here, the distribution of X is taken as normal with mean μ and variance σ^2, μ and σ^2 both being known constants. Obviously, μ stands for person's true score, a measure of person's true ability. Now, in a situation when either the same test or its parallel form is administered to the person in varying environmental conditions, resulting inculcation of measurement errors that might creep in due to the subjectivity arising from sampling of contents, sampling of objectives within the content, testing situations, inter- and intra-examiner variability, etc., the assumption regarding person's constant true score seems to be unrealistic and restrictive. To overcome this difficulty, the person's true score, μ, be considered as a random variable and the uncertainty about the value of μ be modelled by assigning a prior probability distribution to it. More so, testing with standardized tests is a continuous valuation process and, as such, a strong prior information representing variations in μ may be available. Following the concept, the study in [Novick & Jackson, 1974] has given the logical basis of Bayesian setup in which updating priors with experimental data in the form of posterior distributions has been the main concern. This posterior distribution is the main tool in the Bayesian setup. However, in the Bayesian framework, it should be recognized that

**Formerly Meerut University, Meerut.*

WWW.JETIR.ORG
7.95 Impact Factor by google scholar

JETIR
editor@jetir.org

An International Scholarly Open Access, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Journal UGC and ISSN Approved Norms | ISSN: 2349-5162

INTERNATIONAL JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH

An International Scholarly Open Access Journal, Peer-reviewed, Refereed Journals, Impact factor 7.95 (Calculate by google scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research Tool), Multidisciplinary, Monthly, Indexing in all major database & Metadata, Citation Generator, Digital Object Identifier(DOI), Monthly, Multidisciplinary and Multilanguage (Regional language supported)

- Publisher and Managed by: IJPUBLICATION
- UGC Approved Journal no 63975(19)

Journal of Emerging Technologies and Innovative Research

International Peer Reviewed & Refereed Journals, Scholarly Open Access Journal

ISSN: 2349-5162 | ESTD Year: 2014 | Impact factor 7.95 | UGC, ISSN Approved Journal no 63975

Website: www.jetir.org | Email: editor@jetir.org

JETIR

Website: www.jetir.org

JETIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (ISSN: 2349-5162)

International Peer Reviewed & Refereed, Scholarly Open Access Journal, Impact Factor: 7.95

ISSN: 2349-5162 | ESTD Year: 2014 | UGC, ISSN Approved Journal no 63975

This work is subjected to be copyright. All rights are reserved whether the whole or part of the material is concerned, specifically the rights of translation, reprinting, re-use of illusions, recitation, broadcasting, reproduction on microfilms or in any other way, and storage in data banks. Duplication of this publication of parts thereof is permitted only under the provision of the copyright law, in its current version, and permission of use must always be obtained from JETIR www.jetir.org Publishers.

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research is published under the name of JETIR publication and URL: www.jetir.org.

©JETIR Research Journal

Published in Gujarat, Ahmedabad India

Typesetting: Camera-ready by author, data conversation by JETIR Publishing Services.

JETIR Journal, WWW. JETIR.ORG, editor@jetir.org

ISSN (Online): 2349-5162

International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR) is published in online form over Internet. This journal is published at the Website http://www.jetir.org maintained by JETIR Gujarat, India.

ISSN : 2349-5162

9 772349 516207

A Study on Similarities between Gandhiji's Basic Education and New Education Policy 2020

Sarika Sharma

INMPG College, Meerut

Introduction

Free and compulsory primary education could be given to every child if the process of schooling could be made self-supporting by imparting education through a useful and productive craft. Gandhiji expressed his views on education through a series of article in 'Harijan' in June 31, 1937, which later on developed into theWardha Scheme of Basic Education. The views of Gandhiji created controversies in the academic circles. Therefore, it was desirable to get the scheme examined by experts and educationists. Finally, Gandhiji placed his Basic Education System to the nation in theWardha Conference in 1937. His educational plan fits nicely in this ordering of priorities. If the march of industrialization could be slowed down and shaped in accordance with a plan for social and political progress, basic education could serve a definite purpose in such progress. More specifically, if purposeful industrialization meant protecting the right of villages to produce what they could without competition with large-scale mechanized establishments, basic education could enhance the productive capacities of village children under such a plan. The ideal citizen in Gandhi's Utopia was an industrious, self-respecting and generous individual living in a small community. This is the image underlying his educational plan. This image of man and the production system sustaining it brings to mind the American philosopher John Dewey (1859–1952), and it is useful to probe the similarities between the educational visions of these two contemporaries.

Problem -Is there any similarities between Gandhiji's Basic Education and New Education Policy 2020?

Objective- To find out similarities between Gandhiji's Basic Education and New Education Policy 2020

Methodology- Enquiry method

Hypothesis- There is significant similarities between Gandhiji's Basic Education and New Education Policy2020

Gandhiji 's Basic Education-

Basic Education is a principle which states that knowledge and work are not separate. Mahatma Gandhi promoted an educational curriculum with the same name based on this pedagogical principle. It can be translated with the phrase 'Basic Education for all'. However, the concept has several layers of meaning **Basic education** can be very important in helping people to get jobs and gainful employment. This economic connection, while always present, is particularly critical in a rapidly globalizing world in which quality control and production according to strict specification can be crucial. A love for manual work will be injected in the mind of children. "Earning while learning" was the motto of this education. This will increase the creativity in a student. As Gandhi wanted to make Indian village self-sufficient unit, he emphasized that vocational education should increase the efficiency within the students who will make the village a self-sufficient unit. (Paresh K. Shah)

Principles of Gandhiji's Basic Education Policy 1937

1. From 7 to 14 years of age, education of each child should be free, compulsory, and universal.
2. The medium of teaching the students should be in mother-tongue.
3. There should be no place for English in the education of a child.
4. Mere literacy cannot be equal to education.

Journal of Emerging Technologies and Innovative Research

An International Open Access Journal Peer-reviewed, Refereed Journal

www.jetir.org | editor@jetir.org An International Scholarly Indexed Journal

Certificate of Publication

The Board of

Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (ISSN : 2349-5162)

Is hereby awarding this certificate to

Sarika Sharma

In recognition of the publication of the paper entitled

A Study on Similarities between Gandhiji's Basic Education and New Education Policy 2020

Published In JETIR (www.jetir.org) ISSN UGC Approved (Journal No: 63975) & 7.95 Impact Factor

Published in Volume 8 Issue 5 , May-2021 | Date of Publication: 2021-05-12

EDITOR

EDITOR IN CHIEF

JETIR2105274 Research Paper Weblink http://www.jetir.org/view?paper=JETIR2105274 Registration ID : 309096

An International Scholarly Open Access Journal, Peer-Reviewed, Refereed Journal Impact Factor Calculate by Google Scholar and Semantic Scholar | AI-Powered Research Tool, Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage Journal Indexing in All Major Database & Metadata, Citation Generator

Dr. Anju Gupta

ISSN : (P) 0976-3635
(e) 2454-3411
Impact Factor 7.721

RJPP

REVIEW JOURNAL OF POLITICAL PHILOSOPHY

A Peer Reviewed & Refereed International Journal

Vol. XIX | Oct. 2020-Mar.2021 | No. 1

Editor :
Dr. Shivali Agarwal

JOURNAL ANU BOOKS
Delhi Meerut
www.anubooks.com

9. युगदृष्टा स्वामी विवेकानंद का चिन्तन वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का मूलाधार
डॉ0 अमरजीत सिंह 'परिहार', प्रतिभा देवी, डॉ0 एम0 के0 त्यागी
10. साहित्य–अर्थ, उद्देश्य एवं राजनीति से अंतःसम्बन्ध 64
डॉ० दीपा पंत
11. आरक्षण व संविधान संशोधन 70
डॉ0 दिनेश कुमार
12. शिक्षाशास्त्री के रूप में महात्मा गाँधी के विचारों का अवलोकन 77
डॉ० प्रज्ञा यादव, डॉ० मुकेश पाल
13. हरियाणा राज्य में जाति के अनुसार स्त्री–पुरूष अनुपात में भिन्नता का स्थानिक एवं कालिक विश्लेषण 84
अल्का शर्मा, प्रो0 नूतन त्यागी
14. श्री अरविन्द की राजनैतिक विचारधारा ('वन्देमातरम्' तथा 'धर्म' के आधार पर) 89
प्राची
15. राजनीतिक संस्कृति की अवधारणाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन 98
डॉ० निवेदिता कुमारी
16. सामुदायिक जीवन शिविर 103
डा0 अन्जु गुप्ता
17- **Green Marketing: A Game Changer of the Modern Era** 110
Dr. Meenu Chaudhary
18- **Problems and Prospects of Tourism Development in District Meerut** 119
Dr. Naresh Kumar, Deepak Chaudhary
19- **Role of Atal Bihari Vajpayee as Prime Minister (1999 – 2004)** 128
Pushpa Kumari
20- **Ideal state: with and without Democracy (An Analysis from Platonic and Gandhian Perspectives)** 148
Priti Pattanaik 154

सामुदायिक जीवन शिविर

डा0 अन्जु गुप्ता
इस्माईल नेशनल महिला पी.जी. कालेज, मेरठ
Email: dranju1612@gmail.com

सारांश

सामुदायिक जीवन शिविर छात्रों को अनुभवजन्य शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान कर, उनमें आत्म सम्मान एवं मानवीय मूल्य के प्रति प्रशंसा के गुण विकसित करता है।संस्था द्वारा सामुदायिक जीवन शिविर के लिए शिक्षा, समाज, संस्कषति व स्थानीय वातावरण से संबन्धित मुख्य प्रकरण का चयन किया जाता है। प्रकरण के अनुसार शिविर के उद्देश्य निर्धारित कर, माडयूल तैयार किया जाता है।छात्र, शिक्षक के निर्देशन में प्रस्तावित स्थान का भ्रमण कर, निरीक्षण एवं साक्षात्कर द्वारा स्थानीय क्षेत्र या गॅाव के व्यक्तियों की आवश्यकता, रूचि व समस्या को जानने का प्रयत्न करता है।सामुदायिक जीवन शिविर के समूह के सभी सदस्यों द्वारा निर्धारित समय पर प्रदत्त कार्य सम्पूर्ण कर, शिविर में रिर्पोट प्रस्तुत की जाती है।द्रश्य–श्रव्य रिर्कोडिंगदेख कर, शिविर के सभी सदस्य एक साथ मिलकर अपने व्यक्गित अनुभव साझा कर, सुधारात्मक व सुझावात्मक चिन्तन करते है।सामुदायिक सेवा शिविर अपने आप में एक ऐसा प्रशिक्षण केन्द्र है, जहॉं युवा सामुदायिक वातावरण में सजृनशीलन, रचनात्मक व वास्तविक प्रतिभागिता का अनुभव प्राप्त करते हैं।

मुख्य शब्दः सामुदायिक जीवन, सेवा शिविर, सामाजिक कार्य।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 18.03.2021
Approved: 27.03.2021

डा0 अन्जु गुप्ता

सामुदायिक जीवन शिविर

RJPP 2021, Vol. XIX, No. I,

pp.110-118
Article No. 16

Online available at :
https://anubooks.com/rjpp-2021-vol-xix-no-1

RJPSS

Review Journal of Philosophy and Social Science

A PEER REVIEWED & REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL

Vol. XLVI | Oct. 2020-Mar. 2021 | No. 1

Editor:
Dr Jayashree Reddy

JOURNAL ANU BOOKS
Delhi Meerut
www.anubooks.com

EMOTIONAL INTELLIGENCE AND PERSONALITY OF TEACHERS

DR. ANJU GUPTA
I.N.M.P.G College,
Meerut
Email: dranju1612@gmail.com

MRS. KALIKA SHARMA
Research Scholar

Abstract

Good teaching requires more than intellect. Since the evolution, aggression and violence have been raising its head and now in 21 century it seems to be rooted deeply in our society. To deal such aggression and violence, teachers must learn to deal intelligently with upsetting and triggering emotions to hold and exhibit pro social acts like charities, friendship, co-operation, helping, rescuing, sacrificing, sharing and altruism. Research findings have proved that teachers can no longer afford to ignore this part of their duty. The teachers have to build positive self-concept of their students, it is essential that they must possess positive personality traits and emotion intelligence in themselves.

Keywords: *Emotional Intelligence, Personality,Teaching effectiveness*

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 18.03.2021
Approved: 28.03.2021
DR. ANJU GUPTA
MRS. KALIKA SHARMA

EMOTIONAL INTELLIGENCE AND PERSONALITY OF TEACHERS

Article No. 22
RJPSS Oct.-Mar. 2021, Vol. XLVI No. 1, pp. 196-201

Online available at:
https://anubooks.com/?page_id=7712

https://doi.org/10.31995/rjpss.2021.v46i01.022

9- Historical And Socio-Economic Perspectives On Dalit Movements In India
Lokeshwari
10- Role Of Sports Activities And Slum Area Children- A Sociological Study of Meerut City, UP, INDIA 68
Captain Dr. Anjula Rajvanshi
11- Good Corporate Governance Principles and Its Importance 79
Dr. Panchali Singh
12- The transition from Justice to Social Justice 97
Priti Pattanaik
13- New woman of shashi deshpande and manju kapur : A comparative study 103
Ravindra Kumar, Dr. Geeta Gupta
14- Is Eco-sophy a sequel to Planetary Humanism? 110
Subhasmita Maharana
15- The problem of violence and its solution: a philosophical outlook 120
Debika Mitra
16- Effect of Multimedia Techniques of Teaching Science in IX Standard Students for Developing of Skills and Achievement of Knowledge in Science 128
Viraj Modi, Dr. A. L. Patil
17- Shuddhaadvaita and Vishuddhaadvaita: A Preferential Estimation 136
Mamata Rani Pati
18- Batik Pattern and Natural Dyes in Home Decor Using Contemporary Art 144
Ms. Lakhwinder Kaur
19- Action, Renunciation and the World (With special Reference to Advaita Vedanta) 151
Dr. Avijita Das
20- Ecotourism Development And Biodiversity Conservation At Hastinapur Wildlife Sanctuary 161
Deepak Chaudhary , Dr Naresh Kumar 170
21- Business Ethics and Sustainability: Moral Approach of Gandhi
Subhashree Sahoo 188
22- Emotional Intelligence and Personality of Teachers
Dr. Anju Gupta, Mrs.KalikaSharma 195
23- Empowering Women through Skill Development Programme: A Case Study of Jan Shikshan Sansthan, Surat
Ms. Udit Digal, Dr. Sunita Nambiyar 201
24- Sustainable Development Of Society Demolarised Child Labour Aspect
Lovely Singh, Dr. Yudhvir Singh 208